सन्त निरंकारी

मूल्य 10/- रू.

वर्ष 55 • अंक 6 जून 2011

सन्त निरंकारी मण्डल (मुख्यालय), दिल्ली के सेवादारों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए सद्गुरु बाबा जी, साथ विराजमान हैं मातृशक्तियाँ

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) में आयोजित सद्भावना दिवस समारोह में शामिल विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधि

इन्दौर (म.प्र.) में मानव एकता दिवस के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर में पंजीयन कराते हुए श्रद्धालु

सन्त निरंकारी

देश व विश्व की बारह भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष 55 | जून 2011 | पृष्ठ 40 | अंक 6

स्थायी

सम्पादकीय	राम कुमार 'सेवक'	2
श्री गुरुवचनामृत	सद्गुरु बाबा जी	17

लेख

सद्गुरु से मिले – दिव्य चक्षु	जसबीर सिंह	3
जीवन में चरित्र का महत्व	सुरेश पाल निरंकारी	4
सत्संग की महिमा	अनिल कवरानी	6
सद्गुरु कैसा चाहिए?	सन्तोष कुमार	8
राखी	विकास कुमार	8
शहीदों के बलिदानों की कद्र करें	जे.आर.डी. 'सत्यार्थी'	9
काँच की बरनी और दो कप चाय	सुरेश पी. इदनानी	13
प्रेम का जन्म और निरहंकारता	रामभूति सिंह	16
सन्तोष	महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'	16
लेह–लद्दाख में निरंकारी संदेश...	कैलाश उपाध्याय	25
ब्रह्म की प्राप्ति – भ्रम की समाप्ति	प्रेम प्रकाश	28
सुखी जीवन का रहस्य	मोहित वधवा	30
सत्संग का प्रभाव	समता नारंग	31

गीत/ कविताएं

काव्य प्रवाह	ज्ञान–कर्म, राजू मुलतानी, रुपीना	27

स्तम्भ

आत्ममंथन		5
स्वाति बूंदें	सुशीला श्रीचन्द निरंकारी	14
गीत माधुर्य	श्रीनिवास, शिव सागर, इन्द्रजीत	15
लोकगीत	सुकृति–समीक्षा, ओम–गोपाल, बाँकेकान्त–खंजड़ी	24
बाल वाटिका	साभार	32
सूचना–समाचार	हरजीत निषाद, विशेष प्रतिनिधि, राज–परवाना, किशोर 'स्वर्ण', शिव कुमार	33
पाठक मंच	पाठकगण	40

सम्पादक (अवैतनिक) राम कुमार 'सेवक'
सह–सम्पादक: हरजीत निषाद
कार्यालय : पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009
फोन: 011–47660200+224,225
हैल्प लाइन: 011–47660360,फैक्स: 47660300
वैबसाइट: http:www.nirankari.org
ई–मेल : patrika@nirankari.org, snm@nirankari.org
नोट : लेखक के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

प्रकाशक एवं मुद्रक सी.एल. गुलाटी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिए, हरदेव प्रिंटर्स, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

फोटोटाइप सैटिंग एवं मुद्रक: हरदेव प्रिंटर्स सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009
कला सज्जा – निरंकारी आर्ट ग्रुप
फोटो : निरंकारी स्टूडियो

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	6 वर्ष	10 वर्ष	आजीवन (20 वर्ष)
भारत /नेपाल	80 रु.	200रु	-	500 रु	800 रु.
यू.के.	£12	-	£60	£100	£150
यूरोप	€15	-	€75	€125	€200
अमेरिका	$20	-	$100	$150	$250
कनाडा/ आस्ट्रेलिया	$25	-	$125	$200	$300

अन्य देश: उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि

सम्पादकीय

अवस्था और व्यवस्था

भक्ति एक अवस्था का नाम है। ऐसी अवस्था जिसके बारे में शायर डॉ. बशीर बद्र ने कहा है –

खुदा हमको ऐसी खुदाई न दे
कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे।
खुदा ऐसे अहसास का नाम है,
रहे सामने और दिखाई ना दे।

खुदा के सामने होने का एहसास स्थूल आँखों की सीमाओं से परे है, इसके लिए तो भाव की आँखें चाहिए।

प्रायः होता यह है कि दिन भर जब हम संसार में विचरण करते हैं तो कभी खुशी का एहसास होता है तो कभी गमी का। किसी ने प्यार के दो बोल दिये तो खुश हो गये (भले ही उसने दिखावे के लिए ही क्यों न कहे हों) किसी ने आशा के विपरीत कुछ कह दिया तो गम की लहरों में तैरने लगे।

अगर विशाल दृष्टि से अवलोकन करें तो हर दिन छोटी–बड़ी खुशियों और छोटे–बड़े गमों का सम्मिश्रण होता है। कभी खुशियाँ ज्यादा होती हैं तो कभी गम ज्यादा होते हैं। इसी हिसाब–किताब में जीवन व्यतीत हो जाता है। अन्त में जब सामने यमदूत बड़ी अदालत का सम्मन लेकर हाजिर हो जाता है तो फिर बगलें झाँकने के अलावा कोई विकल्प शेष नहीं बचता। इस दर्दनाक परिस्थिति से बचाने के लिए ही सद्गुरु बाबा जी ने कह दिया – **जैसी भी हो परिस्थिति, रहे एक सी मनोस्थिति।**

खुशी का समय हो या दुख का, हर परिस्थिति में निरंकार को ढाल की भाँति सामने रखें ताकि भक्ति वाली अवस्था बनी रह सके लेकिन समस्या यह होती है कि हम प्रायः स्थूल नेत्रों से आगे जाते ही नहीं। निज भाव तो प्रायः चापलूसी के घेरे से आगे देखता ही नहीं।

स्थूल नेत्र देखते हैं – पद, प्रभाव, सुविधाएं और सम्मान। ये चारों चीजें इतनी मनमोहक हैं कि इनके लिए इन्सान कहीं तक भी गिरने को तैयार हो जाता है। बाद में जब अदालत का सम्मन आता है तब सोचता है कि काश! मैं नीचे ना गिरा होता लेकिन बुजुर्गों ने कहा है – **अब पछताय क्या होत, जब चिड़िये चुग गयीं खेत।** दिन–रात रूपी चूहे, जीवन की रस्सी को निरन्तर कुतर रहे हैं लेकिन माया न चूहों को देखने देती है, न जीवन को। लालसाओं की मुस्कान पर आदमी प्रायः भक्ति को कुर्बान कर देता है।

वास्तविकता यह है कि विश्व में जितने भी पदों की उत्पत्ति हुई है, वह व्यवस्था को बनाये रखने के लिए ही हुई है लेकिन व्यवस्था के नाम पर प्रायः अवस्था की बलि चढ़ायी जाती रही है। सत्यनिष्ठा व ईमानदारी को नारे की तरह इस्तेमाल करके आदमी भ्रष्टाचार के बड़े–बड़े कीर्तिमान बनाता है और अन्त में चौरासी लाख योनियों की जेल में चला जाता है।

विगत दिनों सद्गुरु बाबा जी ने दिल्ली में गुरमत की व्याख्या करते हुए बताया कि गुरमत को जीवन में ढालना एक चुनौती है, यह आसान काम नहीं है।

इस प्रवचन पर चिन्तन किया तो पाया कि वाकई चुनौती बहुत प्रबल है लेकिन जो सेवादार हैं उनके लिए इस चुनौती पर विजय पा लेना कम कठिन है क्यों कि उनका अहंकार काफी छोटा है। इसके विपरीत एक पदाधिकारी के लिए यह चुनौती उतनी ही ज्यादा कठिन है, जितना बड़ा उसका अहंकार है।

इस अवस्था में आदमी दोराहे पर आकर अटक जाता है कि इधर जाऊँ या उधर जाऊँ?व्यवस्था और अवस्था में से किसे पकड़ूँ, किसे छोड़ूं?

निरंकार प्रभु–सद्गुरु की कृपा है कि उपर्युक्त चारों चीजें – पद, प्रभाव, सुविधाएं व सम्मान मिल रहा है, इसे छोड़ने की जरूरत नहीं सिर्फ इसकी आसक्ति से बचने की जरूरत है। इन्हें प्रभु की अमानत समझने की जरुरत है। आसक्ति से बच गये तो अहंकार से बच जायेंगें। अहंकार से बच गये तो पीड़ितों व वंचितों से मिलने वाली अनेकों बद–दुआओं से बच जायेंगे। गुरमत की चुनौती पर विजय पानी आसान हो जायेगी।

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के शब्दों में – "गुरसिख से ऊँची कोई पदवी नहीं है। शेष पदवियाँ केवल जिम्मेदारियाँ हैं जो बढ़ते हुए परिवार के लिए हैं। मिशन को आगे बढ़ाने के लिए नाना रूपों में जिम्मेदारियाँ दी जाती हैं।" (दिल्ली – 16.11.2009)

यह सच्चाई हर कोई जानता है कि पक्षी चाहे आकाश में जितनी भी ऊँची उड़ान क्यों न भर ले, अन्ततः उसे नीचे ही आना पड़ता है। व्यवस्था मानो एक आकाश है, और अवस्था एक धरती है। आकाश के लिए धरती को त्याग देना बुद्धिमानी नहीं है। आकाश में जितनी चाहे उड़ान भरें लेकिन धरती को कभी न भूलें ताकि व्यवस्था भी बनी रहे और अवस्था भी।

❑ राम कुमार 'सेवक'
rksewak@yahoo.co.in

सद्गुरु से मिले दिव्यचक्षु

❑ जसबीर सिंह (जम्मू)

दास के एक मित्र पेशे से एडवोकेट हैं। अक्सर दास उनसे ब्रह्मज्ञान, सद्गुरु, आत्मा, परमात्मा आदि विषयों पर बातचीत करता रहता है परन्तु वे हमेशा तर्क से बात को काटते हैं। कहते हैं कि मृत्यु के बाद क्या होगा कौन जानता है, अतः किसी ज्ञान व गुरु की आवश्यकता ही नहीं है। दास सोचता कि बहुत विद्वान पुरुष हैं, फिर भी पता नहीं दातार इन्हें अपने चरणों में क्यों नहीं लगा रहा? शायद दास को सही प्रकार चर्चा करना नहीं आया। अरदास की कि सच्चे पातशाह कृपा कर कोई ऐसा वचन बुलवा कि इनमें ज्ञान प्राप्ति की इच्छा पैदा हो जाए।

दातार–सद्गुरु की कृपा से दास एक शाम उनके चैम्बर में पहुँचा। उन्होंने मुस्कुराकर स्वागत किया और अपने बगल वाली कुर्सी पर बिठाया। फिर बोले, "आज कोई प्रवचन नहीं सुनाओगे?" (दास को लगा कि शायद हर जगह ज्ञान की चर्चा करने के कारण दास के बारे में लोग यही सोचते हैं कि जब मिलेगा ज्ञान पर प्रवचन ही करेगा।) मन ही मन दास ने अपने सद्गुरु का ध्यान करके बात शुरु की पूछा– "एडवोकेट साहब, दुनिया की रंग–बिरंगी वस्तुएं हम अपनी आँखों से ही तो देखते हैं ना?" वे बोले, "हाँ"। दास ने पूछा, "यदि आँखें बन्द कर ली जाएं तो क्या दिखेगा?" वे बोले, "अंधेरा"। दास ने फिर प्रश्न किया, "यदि आँखें किसी कारणवश खराब हो जाएं तो?" उनका उत्तर था – "अंधेरा"। दास ने कहा कि मतलब यह कि यदि आँखें न हों तो अंधेरा ही अंधेरा अर्थात् भ्रम, ठोकरें व परेशानी। दास ने अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा कि यदि कुछ समय के लिए बिजली चली जाए तो हम अपने ही घर में अंधेरे से परेशान हो जाते हैं। कई बार अपने ही घर में, अपने ही सामान से टकराकर गिर जाते हैं और चोट लग जाती है। अंधेरे में रस्सी देखकर साँप का भ्रम पाल बैठते हैं। वे बोले, "आज अंधेरे पर ही प्रवचन करोगे या कुछ ज्ञान की बात भी करोगे?"

दास ने कहा, "भाई साहब, आँखें तो इस पंचभौतिक शरीर की ही अंग हैं जिन्हें धारण कर आत्मा मृत्युलोक में आई और इन्हें यहीं छोड़कर जाना है। आँखें तो साथ नहीं जाएंगी। फिर तो वह अंधेरा ही अंधेरा, भटकन, परेशानी। इतने में तीन–चार सज्जन उनसे मिलने हेतु चैम्बर में दाख़िल हुए। दास ने वहाँ से विदा लेना ही उचित समझा, अतः औपचारिकता निभाकर लौट आया। शायद यह पहला दिन था जब उन्होंने तर्क नहीं किया। दास रात को घर लौटा और रात्रिभोजन के पश्चात सुमिरण करते–करते सो गया।

अगली सुबह करीब 5.30 बजे दास के मोबाइल की घंटी बजी। देखा तो एडवोकेट साहब का नम्बर। उठाने पर वे छूटते ही बोले, "सरदार साहब, डरा दिया ना! सचमुच विचारने योग्य विषय

है कि मरने के बाद इन आँखों के बिना.....।" चलो मान लिया कि मरने के बाद ये आँखें यहीं रहेंगी, परन्तु आप का भी तो यही हाल होगा। आप भी तो ये आँखें साथ नहीं लेकर जा सकते। चलो अच्छा है। दोनों साथ–साथ अंधे रहेंगे।"

ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु से प्राप्त दिव्यचक्षु से, शरीर के रहते और इसके न रहने पर भी दिव्य प्रकाश का आनन्द मिलता रहता है।

यद्यपि दास नींद में था तथापि दास ने तपाक से उत्तर दिया "एडवोकेट साहब, दास का इंतज़ाम तो हो चुका है।" वे विस्मृत से होकर बोले – "तो क्या आप अपनी आँखें साथ लेकर जाओगे?" दास ने कहा – "बिल्कुल।" वे बोले "असम्भव।" दास ने कहा कि यदि ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु की कृपा हो तो यह असम्भव कार्य सरलता से सम्भव हो जाता है और हो चुका है। उन्होंने पूछा – "कैसे?" दास ने गीता में से भगवान श्रीकृष्ण का यह वचन दोहराया कि – "हे अर्जुन, तुम मुझे इन नेत्रों से नहीं देख सकते। वे दिव्य चक्षु तुम्हें मैं दूंगा।"

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज की अपार कृपा से दास को ब्रह्मज्ञान रूपी आँखें प्राप्त हो गई हैं इसलिए शरीर के रहते भी दिव्य प्रकाश है। शरीर के न रहने पर भी यह दिव्य प्रकाश रहेगा। प्रकाश के कारण न कोई भ्रम, न भटकन और न ही कोई ठोकर। सिर्फ आनन्द ही आनन्द।

एडवोकेट साहब बोले, "मुझे अब समझ में आया कि आप मुझसे ज्ञान, गुरु, आत्मा व परमात्मा की चर्चा क्यों करते हैं।" बाबा जी की असीम कृपा से आज वे ज्ञानवान हैं। धन्यवाद सद्गुरु बाबा जी का, जिन्होंने उन्हें भी अपने श्रीचरणों के साथ लगा लिया। ■

जीवन में चरित्र का महत्व

❑ सुरेश पाल निरंकारी (रुड़की)

मनुष्य के जीवन में चरित्र का विशेष महत्व है, जो इन्सान चरित्रवान होता है, वह परिवार एवं सम्पूर्ण समाज में मान–सम्मान का पात्र होता है। समाज में उत्तम, चरित्रवान व्यक्ति की छवि भी उत्तम बन जाती है। इसके विपरीत चरित्रहीन व्यक्ति का अध्यात्म में कोई मान–सम्मान नहीं होता है। चरित्रहीन व्यक्ति प्रभु की नजरों से गिर चुका होता है। चरित्र एवं तद्नुरूप व्यवहार का परस्पर विशेष सम्बन्ध होता है। यदि ये उत्तम गुण इन्सान के जीवन में होते हैं तो वह समाज के लिए प्रेरणा का रूप बन जाता है। उत्तम चरित्र इन्सान के जीवन का आधार एवं उसके जीवन की मजबूत नींव होती है।

ब्रह्मज्ञानी भक्त तो इस स्वामी को जानकर अपने चरित्र के प्रति और शेष विषयों में भी सजग व चेतन रहते हैं। भक्त हर पल इस स्वामी को अपने अंग–संग देखते हैं। इस निराकार परमात्मा की मौजूदगी का अहसास होने के कारण वे अपने चरित्र को बेदाग रखते हैं, क्यों कि भक्त जानते हैं कि मेरे हर कर्म को देखने वाला यह मेरा स्वामी हर पल मेरे साथ रहता है।

युगपुरुष बाबा अवतार सिंह जी चरित्र निर्माण की प्रेरणा देते हुए फरमाते हैं – "सन्तजनों, आप माया में उलझकर कोई ऐसा काम न करो कि आपके लोक–परलोक दोनों बिगड़ जायें। आपको ज्ञान रूपी नेत्र दिये हैं यदि आप ही इन्हें बन्द कर लें तो इसमें गुरु का क्या दोष है?"

अतः संसार में प्रत्येक इन्सान को उत्तम–चरित्रवान बनकर जीवन जीना चाहिए, तभी हम उत्तम समाज के निर्माण की स्थापना करने में योगदान देने के पात्र बन सकेंगे। ■

आत्ममंथन
अपना ज्ञान बढ़ाएं

सामयिक / ऐतिहासिक / साहित्यिक

1. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के प्रवचनों की पुस्तक 'विचार प्रवाह' के अब तक कितने भाग प्रकाशित हो चुके हैं ?
अ–दो ब–तीन स–चार द–पाँच

2. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज सद्गुरु रूप में कब प्रकट हुए ?
अ–27 अप्रैल, 1980 ब–26 अप्रैल, 1980
स–25 अप्रैल, 1980 द–24 अप्रैल, 1980

3. सन्त निरंकारी (गुजराती) की सम्पादक कौन हैं ?
अ–श्रीमती राज वासदेव सिंह ब–श्रीमती जोगिन्दर कौर स–श्रीमती बलजीत कौर द–श्रीमती सीता देवी

4. सन्त निरंकारी मिशन की आधिकारिक वेबसाइट कहाँ से संचालित की जाती है ?
अ–मुंबई ब–शिकागो स–दिल्ली
द–लन्दन स–*www.nirankari.org*
द–*www.snmandal.org*

5. 'हँसती दुनिया' में प्रतिमाह 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के एक शब्द की व्याख्या प्रकाशित की जाती है। यह व्याख्या कौन लिखता है ?
अ–श्री सी. एल. गुलाटी ब–श्री सुलेख 'साथी' स–श्री देसराज आहूजा द–श्री विनय जोशी

6. सन् 1982 का 'गुरबचन साहित्य पुरस्कार' किसे प्रदान किया गया था ?
अ–श्री मान सिंह 'मान' ब–श्री के. सी. 'राही'
स–श्री के. एल. नागपाल द–श्री धर्म सिंह 'शौक'

7. सन्त निरंकारी मण्डल की ऑस्ट्रेलिया देश की कौन सी ब्रांच को जुलाई, 2010 में दूसरी बार 'विक्टोरिया डे' पुरस्कार प्रदान किया गया ?
अ–कैनबरा ब–सिडनी स–पर्थ द–मेलबोर्न

धार्मिक / आध्यात्मिक

8. इस्लामिक रीति में निकाह के समय कौन निकाह की रस्में सम्पन्न कराता है ?
अ–पंडित ब–काजी
स–हाजी द–परिवार का मुखिया

9. भगवान श्री कृष्ण ने यमुना में विद्यमान किस नाग को मारकर गोकुलवासियों की रक्षा की थी ?
अ–कालिय ब–तक्षक
स–शेषनाग द–इनमें से कोई नहीं

10. कुंती के किस पुत्र ने महाभारत के युद्ध में कौरवों का साथ दिया था ?
अ–अर्जुन ब–भीम स–कर्ण द–सहदेव

11. अश्वत्थामा के पिता का नाम क्या था ?
अ–अर्जुन ब–द्रोणाचार्य स–शान्तनु द–दुष्यन्त

12. रामायण के किस कांड में भगवान श्री राम के जन्म और बाल लीलाओं का वर्णन किया गया है ?
अ–उत्तरकाण्ड ब–सुन्दरकाण्ड
स–अयोध्याकाण्ड द–बालकांड

13. किस आभूषण को देखकर लंका में सीता जी को हनुमान जी की पहचान हुई ?
अ–चूड़ामणि ब–हार स–अंगूठी द–पायल

नैतिक / वैचारिक

14. बाबा जी की फोटो वाले लाकेट पहनने से क्या भक्तिभाव में बढ़ोतरी होती है ?
अ–हाँ ब–नहीं
स–हो भी सकती है द–क्या पता होती हो

15. आपका सबसे अच्छा दोस्त कौन सा है ?
अ–जो आपकी बहुत तारीफ करे
ब–जो आपकी हर गलती माफ करे
स–जो आपकी हर बात माने
द–जो आपको सत्संग से जोड़े

(सही हल अन्यत्र दिये गये हैं)

सत्संग की महिमा

❑ अनिल कवरानी (महरौली, दिल्ली)

सत्संग की महिमा से हमारे धर्मग्रन्थ भरे हुए हैं। सन्तों–महापुरुषों ने भवसागर पार होने के लिए हमेशा सत्संग की प्रेरणा दी है। सत्संग ऐसा सुखद, आध्यात्मिक, आनन्द भरा अनुभव है जिसे स्वयं सत्संग में उपस्थित होकर ही अनुभव किया जा सकता है। दूर रहकर सत्संग का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त करना सम्भव ही नहीं है, इसके लिए सन्तों का सान्निध्य आवश्यक है।

एक दिन की बात है दास अपनी बच्ची, जो कि उन दिनों विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकी थी, के लिए उसके मित्र के घर से विद्यालय में हुए कार्य की कार्य पुस्तिकाएं (*Homework copies*) लेने गया। रास्ते में ध्यान आया कि क्यों न इनकी फोटोकॉपी करवाकर मूल पुस्तिकाएं उन्हें वापस लौटा दूँ। पाँच रुपये दुकानदार को देकर फोटोकॉपी करवा लीं। वहाँ से वापस आते समय मन में ख्याल आया कि क्या एक दिन की पढ़ाई की कीमत केवल पाँच रुपये है, जो दास ने फोटोकॉपी कराने के लिए दी है? फोटोकॉपी किये हुए उन कागजों से कक्षा में क्या–क्या कार्य करवाया गया था यह तो पता चल गया, परन्तु अध्यापिका ने क्या समझाया यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। इस उधेड़बुन में दास का ध्यान अकस्मात् सत्संग की ओर चला गया। अनेकों बार ऐसा होता है कि दास सत्संग में स्वयं उपस्थित होने की बजाय, अपने मन को यह कहकर समझा लेता है कि चलो कोई न कोई परिचित महात्मा तो सत्संग में गए होंगे, उन्हीं से विचार पूछ लूंगा। यह भी ध्यान में आया कि आजकल तो ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग का आधुनिक सिस्टम भी उपलब्ध है और कई लोग उसे ही सुन–देखकर आनन्द प्राप्त कर लेते हैं।

आत्मविश्लेषण करने पर पाया कि अगर किसी मजबूरी के कारण या किसी अत्यावश्यक जिम्मेदारी को निभाने हेतु कोई व्यक्तिगत रूप से सत्संग में उपस्थित नहीं हो पा रहा है तो अलग बात है अन्यथा यह भाव मन में बनना कि ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग भी मेरे मन पर वही असर करेगी उचित नहीं है। यह एक खतरनाक बीमारी की प्रारम्भिक निशानी हो सकती है। इस बीमारी से ग्रसित व्यक्ति धीरे–धीरे व्यक्तिगत रूप से सत्संग में उपस्थित होना ही बन्द कर देता है। विचार करें कि जब सत्संग हॉल अथवा पंडाल में उपस्थित होने के बावजूद मन को महात्माओं की भावनाओं के साथ जोड़ पाना कठिन होता है तो फिर केवल सीडी – रिकॉर्डिंग सुनने या देखने से

मन को एकाग्र कर पाना कितना कठिन होगा। अक्सर हम सभी का अनुभव भी यही होता है कि यदि वक्ता के साथ हमारी आँख नहीं मिलती तो ध्यान बिखर जाता है। इसी प्रकार कैसेट या सी डी तो चल रही होती है लेकिन हमारा ध्यान दसो दिशाओं में भ्रमण कर रहा होता है।

जिस प्रकार विद्यालय में उपस्थित होने पर अपने और अन्य कक्षाओं के छात्र–छात्राओं व अध्यापक–अध्यापिकाओं के सकारात्मक गुणों के प्रभाव विद्यार्थी पर पड़ते हैं, उसी प्रकार जब सत्संग में आते हैं तो गुरु की मेहर भरी नज़र, सन्तों–महापुरुषों की प्रेमिल दृष्टि व व्यवहारिक प्यार सहज ही प्राप्त होता है, मांगना भी नहीं पड़ता है। इसी बात को एक उदाहरण के द्वारा महात्मा समझाते हैं कि एक सेवादार को वर्दी पहनकर, धूप में, पार्किंग में सेवा करते समय यह विपरीत विचार भी आ सकता हैं कि मुझे तो आज एक आवश्यक कार्य से बाहर जाना था, परन्तु अधिकारी महात्मा हमेशा मेरी ही ड्यूटी लगा देते हैं, न जाने क्यों उन्हें कोई दूसरा सेवादार नज़र ही नहीं आता है। दूसरी तरफ, जो महापुरुष सत्संग में पधार रहे हैं या वापस जा रहे हैं, वे सहज में ही उस सेवादार महात्मा को आशीर्वाद देते चले जाते हैं कि – यह कितना कर्मठ सेवादार हैं जो कड़ी धूप में भी तन्मयता से सेवा पर तैनात है। इस महात्मा को सद्गुरु सभी सुख प्रदान करना, और शक्ति देना ताकि यह इसी प्रकार सेवा करता रहे। इस प्रकार बिना मांगे अनन्त आशीर्वाद प्राप्त होते जाते हैं।

भक्त हमेशा यही चाहता है कि सन्तों के संग की भूख बनी रहे ताकि मन विनम्र, निर्मल और सुखमय होता चला जाये।

नित्यप्रति विद्यालय में जाने से जिस प्रकार अध्यापक के दिये ज्ञान पर भरोसा अडिग होता जाता है, उसी प्रकार सत्संग में नित्यप्रति उपस्थित होने से मन का विश्वास, गुरु पर, साध संगत और निराकार–परमात्मा पर अडिग होता जाता है। सत्संग रूपी गंगा में स्नान करके मन पावन होता जाता है। कहा भी है कि – *A man is known by the company he keeps.* (व्यक्ति की पहचान उसकी संगति से होती है।)

यदि कोई चाहता है कि लोग उसे अच्छी दृष्टि से देखें, उसे मिलने से लोगों को प्रसन्नता हो, सुकून महसूस हो, उससे मिलकर लोग उसके साथ और समय व्यतीत करने की चाहना रखें तो उसे सद्गुणों को अपने जीवन में सम्मिलित करना होगा।

प्रभु की दरगाह में अपने मन को स्वच्छ रखने हेतु सन्तों का संग ही सरल और सहज साधन है। भक्त सदैव यही कामना करता है कि सन्तों के संग की भूख मन में हमेशा बनी रहे। इस संग के फलस्वरूप मन विनम्र, निर्मल और सुखमय होता चला जाता है।

आत्ममंथन (सही हल)

1.ब	5.द	9.अ	13.स
2.अ	6.अ	10.स	14.ब
3.स	7.द	11.ब	15.द
4.स	8.ब	12.द	

सद्गुरु कैसा चाहिए?

❑सन्तोष कुमार (इच्छापुर, प.बंगाल)

ईश्वर को पाने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। सद्गुरु वह सेतु हैं जो हमें अज्ञान रूपी महासागर के पार ईश्वर तक ले जाता है। सद्गुरु हमें ईश्वर से मिलाते हैं। अब प्रश्न उठता है कि सद्गुरु कैसा होना चाहिए?सद्गुरु की पहचान क्या है?इस प्रश्न पर विचार करने पर पाते हैं कि सच्चे जिज्ञासु बनकर प्रभु का बोध कराने वाले गुरु की खोज करनी होगी, क्यों कि यह जन्म–जन्मान्तरों का सौदा है। इसके लिए क्या है आपके पास कसौटी?महापुरुष–सन्तजन बताते हैं कि गुरु की पहचान उसका बाहरी वेश, उसके पीछे लगी संगत की भीड़ या उसके चेहरे का नूर मात्र ही नहीं होता। यदि हम इनमें से किसी भी कसौटी के आधार पर गुरु की खोज करते हैं, तो अवश्य ही धोखा खाएंगे। गुरु की पहचान तो ब्रह्मज्ञान हुआ करता है। लोग प्रायः भक्ति मार्ग पर कदम बढ़ाने से हिचकिचाते हैं परन्तु धोखा केवल वे खाते हैं, जो आँखें बन्द करके चलते हैं। जो सही कसौटी के आधार पर गुरु की तलाश करते हैं वे कभी धोखा नहीं खाते। हमारे धर्मग्रन्थ बताते हैं कि गुरु की पहचान या सच्चे गुरु की कसौटी केवल 'ब्रह्मज्ञान' है। जब सद्गुरु जीवन में आते हैं तो हमें 'ब्रह्मज्ञान' प्रदान कर अन्तर्मुखी बनाते हैं। ब्रह्मज्ञान के प्रताप से वे शिष्य के भीतर ही दिव्य अनुभव प्रकट कर देते हैं। इस प्रकार एक शिष्य अपने भीतर ही परमप्रकाश का अनुभव करता है। ऐसा प्रकाश जिसके लिए न घी, न बाती और न ही दीपक की जरूरत है।

परम प्रकाश रूप दिन राती।
नहिं कुछ चाहिए दिआ, घृत, बाती।।

आज निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज दुनिया को यही संदेश दे रहे हैं कि मानव को जीवन में खुशियाँ और आनन्द प्राप्त करना है तो परमात्मा को जानकर ही इसकी भक्ति करनी होगी। यही मानव जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। ■

राखी

प्रस्तुति ❑ विकास कुमार (बेगुसराय, बिहार)

कवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर साम्प्रदायिक एकता के समर्थक थे। संयोगवश कलकत्ता में जिन दिनों साम्प्रदायिक तनातनी फैली हुई थी, उन्हीं दिनों रक्षाबन्धन का पर्व आ गया। वे साथियों के साथ गंगा स्नान करने गये।

लौटते समय सबको राखी बांधते हुए आने लगे। रास्ते में कुछ मुसलमान साईसों (घोड़े–तांगे वालों) को देखा। वे उनके पास गये और राखी बांधी। अपने साथियों की कल्पना के विपरीत सारे साईस बिगड़ने की बजाय कवि से गले मिले।

उसके बाद रवि बाबू ने चित्तपुर की बड़ी मस्जिद में जाकर मौलवियों को राखी बांधने की इच्छा जाहिर की। लोगों को अब दंगा होने में कोई सन्देह न रहा। उनके अनेक साथी इधर–उधर खिसक गये परन्तु कविवर ने सभी मौलवियों को राखी बांधी और मौलवियों ने उन्हें प्रणाम किया।

जब हृदय विशाल हों और मन के भाव भी शुद्ध हों तब टकराव न होकर प्यार ही उत्पन्न होता है। निरंकारी बाबा जी भी आज यही शिक्षा दे रहे हैं कि –

ना वैर ना तकरार की,
अब है जरूरत प्यार की।

हम भी सद्गुरु बाबा जी के वचनों पर चलकर प्यार ही बाँटते चले जायें। ■

शहीदों के बलिदानों की कद्र करें

□ जे.आर.डी. 'सत्यार्थी' (प्रधान – सन्त निरंकारी मंडल)

अमर शहीदों के बलिदान ही किसी भी आन्दोलन की बुनियाद हुआ करते हैं। आज हम जिस शान्ति, प्रेम व आनन्द का अनुभव कर पा रहे हैं, वह अमर बलिदानी महापुरुषों के बलिदानों का ही परिणाम है।

सन्त निरंकारी मिशन को आज हम जिन ऊँचाईयों का स्पर्श करते हुए देख रहे हैं, उसमें सहज ही हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर जाता है कि अमर शहीदों के बलिदानों की कद्र हम कर पाये हैं या नहीं?

1978 में अमृतसर से शुरु हुए अमर बलिदानों की यह श्रृंखला कानपुर, दुर्ग आदि से होती हुई नब्बे के दशक तक चलती रही है। इस अवधि में जितने भी बलिदान दिये गये, वे गुरमत के महान उसूलों के लिए थे। कुल 139 सन्तों ने जो अपने प्राणों की बलि देकर निरंकारी मिशन के महान सिद्धान्तों को मजबूती दी, उनमें युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी व चाचा प्रताप सिंह जी जैसी दिव्य विभूतियाँ भी सम्मिलित हैं।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने जहाँ सत्य सिद्धान्तों को बहुत तीव्रता से आगे बढ़ाया वहीं हमारे जीवन को भी व्यवहार के ऊँचे आदर्श प्रदान किये। उन्होंने बहुत साहस व हौसले के साथ जहाँ आचरण की पवित्रता पर जोर दिया वहीं नशाबन्दी व सादा शादियों का संदेश देकर जहाँ हमें सरल समाधान दिया वहीं देश व विश्व के नागरिकों को भी एक नयी जाग्रति प्रदान की।

1962 में सद्गुरु रूप में अवतरित होने के बाद ही उन्होंने सत्य सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार को गति देने के ध्येय से मसूरी में दो कॉन्फ्रेंसेज कीं, जिनमें मिशन के संगठन को जहाँ मजबूती प्रदान की गयी वहीं परिवार व समाज को भी रचनात्मक दिशा दी गयी। नशाबन्दी का संकल्प प्रदान करते हुए मई 1973 में हुई मसूरी कॉन्फ्रेंस में बाबा जी ने फरमाया कि – "जितने भी भक्त यहाँ बैठे हुए हैं, आज से ही, वे ऐसा दृढ़ प्रण करके यहाँ से जायें कि कभी भी कोई भी ऐसी नशीली चीज (शराब, अफीम, भांग, गांजा अथवा इस तरह की बीड़ी–सिगरेट आदि) के इस्तेमाल से बचना है। जैसा कि इनसे बचने का पहले से ही आदेश है, यही दृढ़ता से इरादा करना है कि हम इनका कभी भी सेवन नहीं करेंगे क्यों कि यह हमारे प्रचार में और परोपकार में रुकावट पैदा

नशा करने वाले बोतलों में शहीदों का खून देख लिया करें।

करती है.....इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं कि खुराक के मामले में हमारा कोई नजरिया बदल गया है या प्रणों में कोई तब्दीली आ गयी है। आज से सभी महापुरुषों ने समाज की भलाई के लिए इन चीजों के इस्तेमाल से पूरी तरह बचना है।"

इस सन्देश का असर यह हुआ कि निरंकारी परिवारों में शराब का प्रचलन बन्द हो गया। 90 प्रतिशत निरंकारी सन्तों ने शराब की लत को पूरी तरह तिलांजलि दे दी। शेष 10 प्रतिशत भी इस कुरीति को त्यागने का प्रयत्न करने में लगे रहे।

1980 में सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने मिशन की बागडोर संभाली। अमर शहीदों के बलिदानों की कद्र करने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा कि अमर शहीदों के बलिदानों की कद्र करनी चाहिए। उनके बलिदान उसूलों के लिए थे। वे उसूल जो हमारी अपनी बेहतरी के लिए थे और हैं। नशाबन्दी भी उनमें से एक है। सद्गुरु के आदेश–उपदेश व शहीदों के बलिदानों की कद्र करते हुए हजारों महापुरुषों ने इसे छोड़ दिया है लेकिन जो अब भी इसे नहीं छोड़ पा रहे हैं, वे नशा करने से पहले बोतल में शहीदों का खून देख लिया करें।

इन शब्दों में बाबा जी ने शहीदों के बलिदानों की कद्र करने की प्रेरणा दी लेकिन हम अब तक इस बुराई को छोड़ नहीं पाये हैं। वर्तमान समय में लगभग 70 प्रतिशत सन्त तो इससे पूरी तरह बचे हुए हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि 30 प्रतिशत अब भी अपना मन मजबूत नहीं कर पाये हैं। ऐसे लोगों को महान बलिदानों का एहसास पूरी तरह नहीं हो पाया है, ऐसा लगता है। आज सन्त निरंकारी मिशन जिस बुलन्दी पर खड़ा है, उस अवस्था में इस बुराई को त्यागना ही होगा।

17 अप्रैल को मैदान नं. 8 में हुए सत्संग समारोह में बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने फरमाया कि कुछ चीजें होती हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि इनसे गुरेज करना है। गुरेज में तो काफी गुंजाइश होती है लेकिन जिसके बारे में पूरी तरह मनाही है, उसमें तो बिल्कुल गुंजाइश नहीं है। नशाबन्दी भी ऐसा ही आदेश है।

सद्गुरु बाबा जी के इस स्पष्ट आदेश पर फूल चढ़ाते हुए अब सबको नशाबन्दी अपनानी होगी, यही गुरमत का तकाजा है।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने 1973 में ही विवाह–शादियों में भी सादगी अपनाने व फिजूलखर्ची रोकने का आदेश दिया था। उन्होंने कहा था – "मेरे ख्याल में यह बहुत बड़ी बात है, इसकी हमारे देश को भी जरूरत है। आज – हमारी जो शादियाँ हैं, उनमें सादगी अवश्य होनी चाहिए। जो भी शादियाँ निरंकारी मिशन के अनुसार होती हैं, वे सुबह के वक्त हों।

साथ ही शादियों से ताल्लुक रखने वाली एक और भी बात है, आज हमारे मुल्क में इस बात की जरूरत भी है। सबसे ज्यादा यहाँ जात–पाँत या ऊँच–नीच का ख्याल पाया जाता है। एक बिरादरी वाला, दूसरी बिरादरी को सहन नहीं करता, एक मजहब वाला दूसरे मजहब वाले से शादी करना

पसन्द नहीं करता। इसके साथ ही शादी की जो परम्परा की बातें है, वे ह्रदय से निकालनी हैं और इससे आगे चलना है। जिसको अन्तर्जातीय विवाह कहा जाता है, वह अवश्य रायज (प्रचलित) करनी है।

.....इसी तरह महापुरुषों को इस बात का भी जरूर ख्याल रखना है कि लड़के की तालीम क्या है या आमदनी क्या है या उसकी कितनी लियाकत है, इसको ख्याल में रखकर ही शादियाँ तय की जायें। यह नहीं कि उसमें पूछा जाये कि तेरा गोत्र क्या है या तेरी बिरादरी क्या है।"

हमारे विवाह सादगी वाले और गुरमत में हों उनमें दिखावेबाजी सौदेबाजी और फिजूल खर्ची न हो।

उपर्युक्त आदेश की रोशनी में होना तो यह चाहिए था कि विवाह में गुण–कर्म–स्वभाव को ही सबसे ऊपर रखा जाता। तंगनजरी, संकीर्णता व फिजूलखर्ची से बचकर विवाह किये जाते लेकिन अभी तक बाबा जी के उपर्युक्त आदेश का भी शत–प्रतिशत पालन सुनिश्चित नहीं हो पाया है।

कई शादियों में जाने का अवसर मिलता है। यह देखकर हैरानी होती है कि रिसेप्शन के नाम पर जो आयोजन होता है उसमें खाने के ही 25 काउंटर लगे होते हैं। बाबा जी ने विवाहों में सम्मिलित होने वालों की संख्या 25 सुनिश्चित की थी, अब तो 500 लोगों की भीड़ नजर आती है। यदि परिवार बड़ा है तो यह संख्या 50 से 75 तक हो जाये, इसमें कोई हर्ज नहीं है लेकिन यह संख्या यदि 500 तक पहुँच जाये तो यह बाबा गुरबचन सिंह जी के सादगी वाले आदेश के विरुद्ध है। दहेज की नुमाइश तो प्रायः नहीं होती लेकिन दहेज की परम्परा तो उसी तरह निभाई जा रही है। इस प्रकार की तड़क–भड़क सद्गुरु बाबा जी के आदेशों–उपदेशों के विरुद्ध है तथा प्रदर्शित करती है कि जिन महान उसूलों के लिए महात्माओं ने बलिदान दिये, उन महान बलिदानों की हमारे मनों में कोई कद्र नहीं है।

आज विवाहों में विशालता, जागरूकता व गुरमत का समावेश किये जाने की अति आवश्यकता है। जाति–बिरादरी–धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर, गुण–कर्म–स्वभाव को आधार बनाकर रिश्ते तय करें, दिखावेबाजी में होने वाली फिजूलखर्ची को रोकें और दहेज की सौदेबाजी के बिना, गुरमत के अन्तर्गत विवाह किये जायें।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज ने जिस सादगी को अपनाने का आदेश–उपदेश दिया था, वह जीवन के हर पक्ष में अपनानी जरूरी है। इस समय तो ऐसा चलन देखने में आ रहा है कि फैशनपरस्ती ने सादगी को पूरी तरह जैसे चलन से बाहर कर दिया है। वस्त्र, विशेषकर बहनों में

इस प्रकार के प्रचलित हैं, जो कि वातावरण की पवित्रता में बाधा डालते हैं, इसलिए इस पर भी ध्यान देना जरूरी है।

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज के पास एक बार एक बच्ची आयी थी, जिसकी इस बारे में अनेकों जिज्ञासाएं थीं। बाबा जी ने उसे समझाया था कि मौके के मुताबिक कपड़े पहनने चाहिए। सत्संग का अपना माहौल होता है, यहाँ सब आत्मिक खुराक लेने आते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए ही कपड़े पहनने चाहिए।

बाबा जी के इस आदेश में कुछ भी ऐसा नहीं है जो हमारे तीसरे प्रण (खान–पान, रहन–सहन के आधार पर किसी से घृणा या किसी की आलोचना नहीं करना) में कोई परिवर्तन करे अपितु इस प्रण का पालन करने में कोई बाधा न आये, इसके लिए बाबा जी ने चेतन किया है। सन्तों–महापुरुषों को चाहिए कि वेशभूषा में भी सादगी बरतें ताकि सत्य के प्रचार–प्रसार में कोई भी रुकावट न पड़े।

पद-प्रतिष्ठा का आकर्षण हमारी भक्ति को घुन की तरह खा जाता है।

अन्त में दास यही महसूस कर रहा है कि यह युग अर्थ प्रधान है। माया का बहुत फैलाव है। इस आधार पर धन का व्यय भी पूरी तरह सोच–समझकर करना चाहिए। साध संगत की माया निर्माण के लिए होती है, मिशन के प्रचार–प्रसार के कार्यक्रमों को गति देने के लिए होती है, उसका उपयोग निजी रुचियों को पूरा करने में ही सीमित कर देना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज कहा करते थे – "जो भी एक–एक पैसा है, गुरमुखों–महापुरुषों का है....यह किसी निर्माण कार्य में ही लगना चाहिए।"

आज देखा जा रहा है कि पैसा इकट्ठा करके भोजन आदि पर काफी खर्च कर दिया जाता है, यह परम्परा कोई अच्छे संकेत नहीं देती। सामूहिक भोजन में मांसाहारी भोजन बहुत पहले बन्द किया जा चुका है इसलिए इस आदेश को भूलना नहीं चाहिए और लंगर में बिल्कुल सादगी रखनी चाहिए। माया का प्रयोग मुख्यतः सन्त निरंकारी मिशन के कार्यक्रमों व निर्माण कार्यों के लिए होना चाहिए।

देखा यह भी जा रहा है कि पद–प्रतिष्ठा का आकर्षण हमारी भक्ति को उसी प्रकार खत्म करता जा रहा है जैसे लकड़ी को घुन खा जाता है और कपड़े को चूहा। इस सम्बन्ध में बाबा गुरबचन सिंह जी का यह आदेश ध्यान रखने की आवश्यकता है – "कई प्रमुख–महापुरुष ऐसे मान और बड़ाई में आ जाते हैं और वे समझ लेते हैं कि शायद यह जैसे कोई सरकारी पदवी मिल गयी है। यह कोई ऐसी पदवी नहीं है। ये रूहानी बातें हैं और रूहानियत से ही ताल्लुक रखती हैं। जहाँ तक गुरमुख का ताल्लुक है, हम एक जैसे हैं, हमारा कोई दर्जा ऊपर और नीचे नहीं है। हम सभी बराबर हैं लेकिन इन्तजाम में हमें कुछ ऐसा करना पड़ता है जैसे कि ये Executive Committee के Members हैं। ये जोनल इंचार्ज हैं, ये प्रमुख हैं या मुखी हैं। इसका कोई यह भाव न समझे कि मैं कोई श्रेष्ठ बन गया।"

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने तो 24 अप्रैल 2011 को भी समझाया कि इस मिशन की बुलन्दी के लिए बहुत तप–त्याग–बलिदान हुए हैं। पदवियों के चक्कर में इस बुलन्दी को कम नहीं करना है।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि महान बलिदानों की कद्र करनी है तो हमें उन उसूलों–आदेशों–उपदेशों को अपने व्यवहार का अंग बनाना होगा, जिसके लिए वे बलिदान दिये गये। ■

एक बोध कथा

काँच की बरनी और दो कप चाय

❐ सुरेश पी. इदनानी

जीवन में जब सब कुछ एक साथ और जल्दी–जल्दी करने की इच्छा होती है, सब कुछ तेजी से पा लेने की इच्छा होती है, और हमें लगने लगता है कि दिन के चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं। उस समय यह बोध कथा, "काँच की बरनी और दो कप चाय" हमें याद आती है – दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर कक्षा में आये और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाने वाले हैं।

उन्होंने अपने साथ लाई एक काँच की बड़ी बरनी (जार) टेबल पर रखी और उसमें टेबल टेनिस की गेंदें डालने लगे और तब तक डालते रहे जब तक कि उसमें एक भी गेंद समाँने की जगह नहीं बची। उन्होंने छात्रों से पूछा – क्या बरनी पूरी भर गई?'हाँ' की आवाज आई। फिर प्रोफेसर साहब ने छोटे–छोटे कंकर उसमें भरने शुरु किये। धीरे–धीरे बरनी को हिलाया तो काफी सारे कंकर उसमें जहाँ जगह खाली थी, समाँ गये। फिर से प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्या अब बरनी भर गई है?छात्रों ने एक बार फिर 'हाँ' कहा। अब प्रोफेसर साहब ने रेत की थैली से हौले–हौले उस बरनी में रेत डालना शुरु किया, वह रेत भी उस जार में जहाँ सम्भव था बैठ गई। अब छात्र अपनी नादानी पर हँसे। फिर प्रोफेसर साहब ने पूछा, "क्यों अब तो यह बरनी पूरी भर गई न?" "हाँ' अब तो पूरी भर गई है", सभी ने एक स्वर में कहा। प्रोफेसर ने टेबल के नीचे से चाय के दो कप निकालकर उसमें की चाय जार में डाली, चाय भी रेत के बीच स्थित थोड़ी सी जगह में सोख ली गई।

प्रोफेसर साहब ने गंभीर आवाज में समझाना शुरु किया – "इस काँच की बरनी को तुम लोग अपना जीवन समझो। टेबल टेनिस की गेंदें सबसे महत्वपूर्ण भाग अर्थात् भगवान, परिवार, बच्चे, मित्र, स्वास्थ्य और शौक की प्रतीक हैं, छोटे कंकर मतलब तुम्हारी नौकरी, कार, बड़ा मकान आदि हैं, और रेत का मतलब और भी छोटी–छोटी बेकार सी बातें, मनमुटाव, झगड़े।

अब यदि तुमने काँच की बरनी में सबसे पहले रेत भरी होती तो टेबल टेनिस की गेंदों और कंकरों के लिए जगह ही नहीं बचती, या कंकर भर दिये होते तो गेंदें नहीं भर पाते, रेत जरूर आ सकती थी। ठीक यही बात जीवन पर लागू होती है। यदि तुम छोटी–छोटी बातों के पीछे पड़े रहोगे, उन्हें प्राथमिकता दोगे, अपनी ऊर्जा उसमें नष्ट करोगे तो तुम्हारे पास मुख्य बातों के लिए अधिक समय नहीं रहेगा। मन के सुख के लिए क्या जरूरी है यह तुम्हें तय करना है। टेबल टेनिस गेंदों की फिक्र पहले करो, वही महत्वपूर्ण है। पहले तय करो कि क्या जरूरी है, बाकी सब तो रेत है। छात्र बहुत ध्यान से सुन रहे थे. ..अचानक एक ने पूछा, "सर, लेकिन आपने यह नहीं बताया कि "चाय के दो कप" क्या हैं?"

प्रोफेसर मुस्कुराये और बोले – "मैं सोच ही रहा था कि अभी तक यह सवाल किसी ने क्यों नहीं किया?" इसका उत्तर यह है कि जीवन हमें कितना ही परिपूर्ण और संतुष्ट लगे, लेकिन अपने खास मित्र के साथ दो कप चाय पीने की इच्छा हमेशा होनी चाहिए। ■

स्वाति बूंदें

प्रेरक प्रसंग

गुरमत से अनन्त सुख

❑ सुशीला श्रीचंद निरंकारी (अमलनेर, महाराष्ट्र)

"गुरु के चरण मेरे बैकुंठ धाम और साध संगत मेरी गंगा है", महात्मा प्रायः ऐसी बातें समझाया करते हैं।

सत्संग में एक माता आई। महापुरुषों को कहने लगी, "महात्मा जी, मेरा छोटा बेटा अनिल तो सत्संग में आता है। बड़ा बेटा सुनील कभी सत्संग में नहीं आता। रोज शराब पीकर घर आता है। सभी को गालियाँ देता है। मार–पीट भी करता है। घर को जैसे नर्क बना देता है। कृपा करो, आप मेरे घर में चरण डालो। बेटे सुनील को आशीर्वाद दो।" महात्मा ने कहा, "चलो।"

हमेशा गुण ही अपनाएं, अवगुण चाहे पिता के ही क्यों न हों उन्हें नहीं अपनाना

दासी भी उनके साथ गई। जैसे ही उनके घर पहुँचे, सुनील खड़ा था। महात्माओं को आते देखा तो उनको नमस्कार किया और बैठने को कहा। महात्मा ने सुनील के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "सुनील, कभी सत्संग में नहीं आते हो, अपनी हालत कितनी खराब कर ली है। दारू क्यों पीते हो?"

सुनील कहने लगा – "यह आदत मुझे अपने पिताजी से लगी। पिताजी भी जब घर पे आते थे दारू पीकर माँ को गालियाँ देते थे। हमें मारते थे। कहा जाता है कि बेटा बाप पर ही जाता है।" महात्मा ने कहा, "अच्छे गुण अपनाने चाहिए बुरे नहीं।"

इतने में छोटा बेटा अनिल आया, महात्माओं को नमस्कार की। महात्मा ने कहा, "तू तो बड़ा भला इन्सान है। सत्संग में आता है। सेवा भी करता है। घर में भी तेरे नाम से सब बहुत खुश हैं। पड़ोस वाले तुझे मसीहा मानते हैं। तूने यह सब कहाँ से सीखा?"

सुनील कहने लगा, "पिताजी से सीखा।" पिताजी जब घर आते थे, गालियाँ देते थे। मारपीट करते थे। मैं मन में सोचता था कि मुझे ऐसा नहीं बनना है। जब मैं सत्संग में आता था, महापुरुषों से सुनता था कि गुरमत पर चलो – एक बनो, नेक बनो। अच्छे इन्सान बनो। महापुरुषों की बात मानी तो मेरी ज़िन्दगी संवर गई। अब तो मेरे लिए गुरु के चरण ही बैकुंठ धाम हैं, साध संगत ही मेरी गंगा है।" दासी सोचने लगी कि एक बेटे ने पिता के गुण अपना लिये और दूसरे ने अवगुण अपना लिये तो दोनों का जीवन परस्पर एकदम विपरीत हो गया। यदि दूसरे बेटे की भाँति पहला बेटा भी पिता के गुण ही अपनाता तो उसकी माता को दुख न झेलना पड़ता। अवगुण चाहे पिता के भी क्यों न हों कभी नहीं अपनाने चाहिए।

गीत माधुर्य

❐ श्रीनिवास (डोला, बागपत)

मेरे सत्गुरु की सिखलाई, हरदम गुरमत में रहना।
हरदम गुरमत में रहना, हरदम गुरमत में रहना।

सत्गुरु गुरमत लेकर आये सबको सुखी बनाने को।
प्रेम, नम्रता, सहनशीलता, भाईचारा लाने को।
यह है सन्तों का गहना, हरदम गुरमत में रहना...

आज्ञा में रह गुरु रिझाना गुरमत यही सिखाती है।
जो कुछ दे गुरु सो ही खाना गुरमत यही पढ़ाती है।
गुरु के वचनों को जीना होता है गुरमत में रहना...

जग में गुरु की रहमत बरसे अमृत, गुरु भक्त ही पीते हैं।
पर जो गुरमत में नहीं रहते हरदम प्यासे रहते हैं।
मेरे सत्गुरु का कहना, हरदम गुरमत में रहना...

नतमस्तक हो मीठा बोलो, मन की छोड़ो चंचलता।
पल–पल सोच भलाई सबकी समदृष्टि कर ले दृढ़ता।
'श्रीनिवास' मान कहना, हरदम गुरमत में रहना....

तर्ज : *भाई जो गुरु बचन पे डटगे कटगे फंद चौरासी के*

❐ शिव 'सागर' (जीन्द, हरियाणा)

धन–माल जो जोड़ा है, तेरे साथ न जायेगा।
सत्गुरु का सहारा ले, तेरे काम ये आयेगा।
धन–माल....

मोह–माया हैं बन्धन, जिनमें तू जकड़ा है।
ये दुःखी करें तुझको, तूने जिनको पकड़ा है।
झूठा अहंकार तेरा, तुझको ही रुलायेगा।
सत्गुरु का सहारा.....

ये पुतला चमड़े का, इसे कौन नचाये है।
कहाँ छुपा मदारी है, जो खेल खिलाये है।
तेरा मालिक तेरे पास, सत्गुरु ही दिखायेगा।
सत्गुरु का सहारा.....

कारोबार बढ़ाया है, परिवार बढ़ाया है।
प्रभु–प्रेम बढ़ाये जो, उसने सब पाया है।
निजघर न जाना अगर, तो ठोकरें खायेगा।
सत्गुरु का सहारा.....

हर स्वाँस कीमती है, न व्यर्थ गँवाओ तुम।
'सागर' सुमिरो हर पल, शुभ कर्म कमाओ तुम।
जीवन किश्ती सत्गुरू, ही पार लगायेगा।
सत्गुरु का सहारा....

तर्ज : *ऐ मेरे दिले नादाँ*.....(टॉवर हाउस)

❐ इन्द्रजीत (पानीपत)

कल दशा और थी आज और मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।
हर अरज़ आप ने की गौर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

यह ज़िंदगी आप को पाकर, हुई तर–ओ–ताजा,
हो चली मुझसे थी जो बोर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

थी तन पे मैली–कुचैली, जो जन्मों से चुनरी,
आप ने की नई–नकोर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

जो पाँच लूटते मुझको, थे दोनों हाथों से,
सेवा करते हैं अब वो चोर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

जो काँटे बन कर गुंचे, चुभन ही देते थे,
करते रक्षा हैं चहुँ ओर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

पतंग झूलती ज़िंदगी, की है थमीं तब से,
आपने थामी जब से डोर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

जो हैं वाकिफ़ मेरी गुरबत, के दिनों से 'इन्द्र'
आज हैरां हैं देख टोर मेरी, मेरे मुर्शद तेरा करम है।

तर्ज : *ऐसा लगता है मैं हवाओं में हूँ*.....
(तुम सा नहीं देखा)

निरंकारी समागमों का प्रभाव

प्रेम का जन्म एवं निरहंकारता

□ रामभभूति सिंह (मिर्जापुर, उ.प्र.)

प्रेम के जन्म एवं निरहंकारता में इतना गहरा सम्बन्ध है कि यह बता पाना बहुत मुश्किल है कि सबसे पहले प्रेम का जन्म हुआ या अहंकार का विनाश।

मुझे इसका सबसे बड़ा उदाहरण निरंकारी सन्त समागम में देखने को मिला। वास्तव में इस सम्मेलन में सत्संगी भाईयों में इतना प्रेम देखकर मैं अवाक् रह गया। मुझे ऐसा लगा कि इतना प्रेम अगर पूरे समाज में फैल जाये तो जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की वाणी हमारे ऋषियों द्वारा बोली गयी थी, वह साकार हो जाये।

क्यों कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश दिया तो गया परन्तु वह समाज में फलीभूत नहीं हुआ। इतना ही नहीं कि वह फलीभूत नहीं हुआ बल्कि इसके विपरीत द्वेष और घृणा की भावना इतनी ज्यादा फैली कि एक पड़ोसी का दूसरे पड़ोसी से बोलना तक बन्द हो गया। कहीं–कहीं तो जटिलताएं इतनी बढ़ गयी हैं कि पति–पत्नी का, भाई–भाई का तथा पिता–पुत्र का शत्रु बन गया है।

मुझे सिर्फ एक मार्ग दिखाई पड़ा है इस समस्या के समाधान का, वह यह कि लोग निरंकारी सन्त समागमों से सीख लें। समागमों में इतना प्रेम कहाँ से फैलता है, यह भगवान की लीला है, उसका चमत्कार है।

वहाँ के सत्संगी भाई अपने को 'दास' कहते हैं। यह अहंकाररहित सम्बोधन है। अब तुलना करें तो पता चलेगा कि समाज में कोई भी व्यक्ति अपने को 'दास' नहीं कहना चाहता, चाहे उसके पास कुछ भी न हो। यह उस सन्त समागम में जाने का असर है कि इन्सान अपने को 'दास' कहता है। ■

बोध कथा

सन्तोष

□ महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही' (जयपुर)

एक दिन वह अपने एक परिचित के घर गया तो उसने देखा कि उनके घर में ठंडा पानी पीने के लिए फ्रिज रखा हुआ है। वह मन ही मन सोचने लगा, "इनके पास तो फ्रिज है, मेरे पास तो फ्रिज भी नहीं है।"

मन में सन्तोष के आते ही बेचैनी गायब हो गई।

कुछ दिनों बाद वह अपने एक अन्य परिचित के घर पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि उनके घर में स्कूटर रखा हुआ है। वह फिर बेचैन होकर सोचने लगा, "इनके पास तो स्कूटर है, मेरे पास तो स्कूटर भी नहीं है।"

एक दिन फिर वह अपने एक रिश्तेदार के यहाँ विवाह के समारोह में पहुँचा। वहाँ उसने उनके घर में कार खड़ी देखी तो वह बहुत व्याकुल हो उठा क्यों कि उसके पास तो कार क्या, स्कूटर ही नहीं था।

अब वह (मन ही मन सोचते हुए) बहुत बेचैन हो उठा था।

थोड़े दिनों बाद, एक दिन उसे अपने गाँव के एक रिश्तेदार के यहाँ आना पड़ा। यहाँ उसने देखा कि रिश्तेदार का बिल्कुल कच्चा झोंपड़ा है। उनके पास तो साइकिल भी नहीं है जबकि उसके पास कम से कम साइकिल तो है।

अब वह मन ही मन सोच रहा था – "कई उससे ऊँचे हैं तो वह भी किसी से तो ऊँचा है।" अब उसे सन्तोष था। उसकी बेचैनी दूर हो गई थी। ■

श्री गुरुवचनामृत

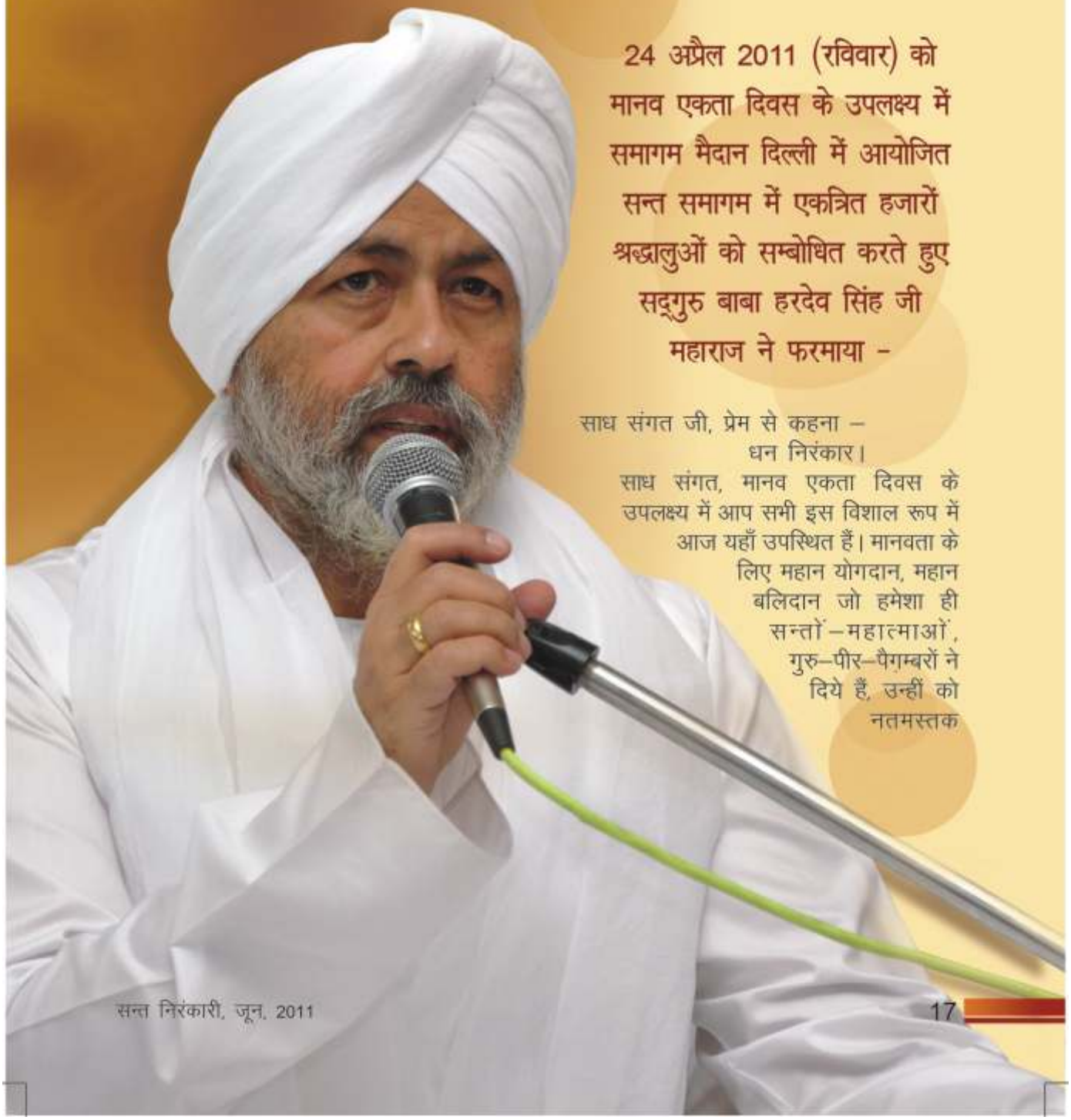

24 अप्रैल 2011 (रविवार) को मानव एकता दिवस के उपलक्ष्य में समागम मैदान दिल्ली में आयोजित सन्त समागम में एकत्रित हजारों श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने फरमाया -

साध संगत जी, प्रेम से कहना – धन निरंकार।

साध संगत, मानव एकता दिवस के उपलक्ष्य में आप सभी इस विशाल रूप में आज यहाँ उपस्थित हैं। मानवता के लिए महान योगदान, महान बलिदान जो हमेशा ही सन्तों–महात्माओं, गुरु–पीर–पैगम्बरों ने दिये हैं, उन्हीं को नतमस्तक

होकर, उनसे प्रेरणा ली जा रही है। उन्हीं उसूलों–शिक्षाओं का अनुकरण–अनुसरण, जो जीवन के द्वारा दी गईं, इसी मानवता को मजबूत करने के लिए, इसको ऊँचाईयों तक ले जाने के लिए। उन बलिदानों और योगदानों को ज़हन में रखते हुए इसी तरह की देन संसार को देने के लिए महापुरुष खुद भी उत्साहित रहते हैं और औरों को भी ऐसे ही भाव प्रदान करते हैं। कितने–कितने रूपों में, कितने–कितने तरीकों से इस संसार में फैले हुए अन्धकार को दूर करने के लिए, जाग्रति लाने के लिए, भ्रमों–भ्रान्तियों को मिटाने के लिए, दिलो–दिमाग को हक़ीकत में स्थित करने के लिए महापुरुषों ने इस संसार में इस मानव जाति को अनेक प्रकार की देन दी है, चाहे वो सतयुग रहा, चाहे त्रेता, चाहे द्वापर, चाहे कलयुग – किसी रूप में भी, किसी समय में भी गुरुओं–वलियों–पीरों–पैग़म्बरों का एक ही ध्येय रहा है कि इन्सान अपने मक़सद को पूरा करे। यह जहाँ आत्मा का कल्याण करे वहीं अपने मूल की भी पहचान करे, मोक्ष का भागीदार बने, वहाँ इस जीवन की यात्रा को भी इन्सानों की तरह तय करे।

परमात्मा पिता है इसकी सन्तानें भाई-भाई हैं। अगर भाई नहीं मान रहे तो परमात्मा को पिता भी नहीं मान रहे।

❖

विश्व के हर मुल्क में मानव रहते हैं। अगर मानव एकता हो जाती है तो विश्व एकता हो जाती है।

आज मानव एकता का, मानवता का जिक्र हो रहा है। इन्सानियत की धज्जियाँ उड़ाने वाले हर युग में, हर दौर में रहे हैं, जिन्होंने इन्सानियत के रास्ते को छोड़कर हैवानियत के रास्ते को अख़्तियार किया। आज के दौर में भी हैवानियत और शैतानियत के रास्ते पर चलने वाले हमें संसार में नजर आते हैं, जिनके दिलों में दया–करुणा–प्रेम का भाव नहीं है। अहम् में चूर होकर, दीवारें खड़ी करके, दूरियाँ पैदा करके, उन दूरियों को और बढ़ाने में यकीन रखने वाले हमें हर स्थान पर नजर आ रहे हैं लेकिन महापुरुषों–सन्तों ने इन दूरियों को मिटाने के लिए, इन्सान को इन्सान के करीब लाने के लिए एक ही पाठ पढ़ाने का प्रयास किया। एक हकीकत, सच्चाई से अवगत कराया, जैसे वो अंग्रेजी में कहावत है – *If God is thy father, man is thy brother* कि अगर कहते हो कि परमात्मा पिता है फिर तो सब इन्सान तुम्हारे भाई हैं। भाई अगर नहीं मान रहे हो तो यह प्रमाणित कर रहे हो कि परमात्मा को भी पिता नहीं मान रहे हो। अगर यह परमपिता है, इसमें आस्था, *Belief* अथवा मान्यता रखते हो तो फिर कौन सा कारण है कि इन्सान, इन्सान से दूरियाँ पैदा करे। नफ़रत व वैर पैदा करे इसीलिए जब *Universal Brotherhood* (मानव एकता) की बात होती है तब विश्व एकता भी साथ ही जुड़ जाती है क्यों कि विश्व के हर मुल्क में मानव रहते हैं। मानव एकता हो जाती है तो विश्व एकता हो जाती है। ऐसी मानव एकता को स्थापित करने के लिए ही सन्तों–महापुरुषों ने युगों–युगों से यही आदेश–उपदेश जीवन के द्वारा दिये हैं। सन्त–महात्मा हर युग में इन्सानों के सामने रोशनी लाये और उस रोशनी में ही संसार रोशन हो जाये यही उनकी अभिलाषा रही है।

आज हम बाबा गुरबचन सिंह जी को, उनकी शिक्षाओं को, उनके योगदानों को याद कर रहे हैं जो जीवन भर उन्होंने दिये – एक बेटे के रूप में, एक शिष्य के रूप में और जब जिम्मेदारी कन्धों पर आई तब उस रूप में भी हर किसी को मार्गदर्शन दिया। फिर यह जीवन भी समर्पित कर दिया मानवता की बलिवेदी पर।

महान बलिदानों को याद रखने का भाव यही है कि उनकी शिक्षाओं को अपनाकर तंगदिली और संकीर्णता छोड़ दें।

उनके योगदानों को याद करके यह मस्तक झुक जाता है। उन्होंने हर रूप को खूबसूरती से निभाया – निष्ठा, लगन और तन्मयता के साथ। अगर बेटे के फर्ज थे तो वो भी बखूबी निभाये, हालाँकि गुरु के ही परिवार में, घर में जन्म लिया लेकिन बेटे का जो उत्तरदायित्व होता है, उसको निभाया और फिर इसी प्रकार से जो मेहनत–मशक्कत, जो दसों नहों की कृत कमाई (दसों नाखूनों अर्थात् दोनों हाथों से की गयी कमाई) कहते हैं, वो भी उन्होंने की, उस रूप में भी अपनी जिम्मेदारी को निभाया। इसी प्रकार एक शिष्य के रूप में बाबा अवतार सिंह जी और पिता जी के रूप में भी उनका जो भी आदेश, जिस तरफ भी इशारा आया उसी तरफ बाबा जी ने अपना मुख कर लिया। इसी प्रकार गुरु के काम आने के लिए हमेशा तैयार रहे। फिर जब गुरु के ही वचन के अनुसार जिम्मेदारी सौंपी गयी फिर उस जिम्मेदारी को भी जिस प्रकार से निभाया यह भी आज सबके सामने है कि किस तरह जिम्मेदारी संभालते ही कितनी सही दिशा मिशन को दी, कैसे–कैसे फैसले लिये प्रेरणाएं दीं, मजबूतियाँ दीं। इस प्रकार ऐसा आधार अपने जीवन के द्वारा बना डाला कि आने वाली सदियों के लिए वो आधार बन गया। इस प्रकार के योगदान जो बाबा गुरबचन सिंह जी ने दिये उनका आज बड़े विस्तार से जिक्र हुआ – चाहे वो गीतों के रूप में, कविताओं के रूप में, व्याख्यानों के रूप में सुनने को मिला। जिनको उनके साथ समय बिताने को मिला या फिर वो पीढ़ी जिसने उनके शारीरिक रूप में जाने के बाद जन्म लिया संसार में और मिशन के करीब आये तो हर किसी ने ये जिक्र और गुणगान किये। वाकई इस प्रकार से वो जीवन जिया गया इसीलिए वो वचन बार–बार दोहराये जाते हैं कि किस तरह उन्होंने सादगी की मिसाल कायम की। उनके स्वभाव की सरलता सबने देखी कि उन्होंने कुछ भी नहीं सोचा कि मेरा रुतबा क्या है और किस प्रकार मेरे से पेश आया जाय। हर किसी के साथ इतनी सादगी से उन्होंने व्यवहार किये कि जिनको उनके साथ व्यवहार के समय और मौके मिले उन सबके हृदय बोलते हैं, सबकी आत्मा बोलती है कि वाकई ऐसे शब्द केवल किसी कवि की कल्पना और सराहना के रूप में नहीं हैं वाकई ऐसा जीवन जिया गया है। अगर कठिनाईयों की, गर्म हवाओं की बात करें, तूफानों की बात करें तो उसका भी सामना कितनी निडरता के साथ, मजबूती के साथ किया। इस प्रकार ऐसे काले बादलों का छा जाना कि यातनाएं होनी और जिस तरह सदियों और युगों से गुरुओं–पीरों–पैग़म्बरों के प्रति अज्ञानता वाले भाव, सरा (कर्मकांडों में लिप्त) के लोग ऐसे ही भाव रखते आये हैं और इस तरह झूठ का सहारा लेकर, अपनी ताकतों का सहारा लेकर जुल्म करते आये हैं। अगर आज हज़रत ईसा मसीह जी का जिक्र हो रहा है, जहाँ *Good friday* मनाया जा रहा है जब कि उनको सूली पर, उस क्रॉस के ऊपर टांगा गया और कितना दर्दनाक दृश्य सबके सामने पैदा हुआ, जो आज तक हमारे ज़हन में बैठा हुआ है। उस वक्त की हुकूमत ने और सरा के

लोगों ने भी केवल अज्ञानता के तहत और झूठ का सहारा लेकर निर्दयता और शैतानियत का रूप पेश किया। इसी प्रकार से इस दौर में भी उसी झूठ का सहारा लेकर, उन्हीं भ्रमों–भ्रान्तियों और अज्ञानता के तहत ही ऐसे–ऐसे काम किये गये जिनके कारण औरों को भी उसी झूठ का सहारा लेकर गुमराह किया गया। जहर मनों में घोला गया, जिसके कारण आज भी हम चारों तरफ जो धर्म के रूप देख रहे हैं, देखा जाता है कि ज़हर ही ज़हर मनों में घोला जाता है, प्यार से, सहनशीलता से दूर रखा जाता है। भाँति–भाँति की दीवारों में हमें बांध दिया जाता है। भ्रमों–भ्रान्तियों की जंजीरों में हमें जकड़ दिया जाता है। ये आज भी धर्म के वही रूप हैं जो पहले भी रहे हैं। सरा और इश्क़, सच्चाई और सरा, अज्ञानता और ज्ञान का उजाला ये दोनों ही सिलसिले लगातार चलते चले आये हैं। उसी लड़ी में मानवता–इन्सानियत को मजबूती देने वाले और मानवता को कलंकित करने वाले, धर्म का सच्चा रूप पेश करने वाले और धर्म और पैगम्बरों को बदनामी दिलवाने वाले हमेशा ही रहे हैं।

आज यही जिक्र हो रहा है कि अगर गुरुओं–पीरों–पैगम्बरों ने मानवता–इन्सानियत को सच्चा धर्म माना है तो इसी मानवता की डगर पर चलने वाले ही सच्चे धर्मी कहलाये जा सकते हैं इसलिए आज मानवता का, मानव एकता का जिक्र हो रहा है क्यों कि अगर यह मानव एकता नहीं होती है तो फिर सुकून नहीं, फिर शान्ति नहीं है जैसे यह भी कहावत है कि – *If you say loudly and wish for peace, peace can never be there if there is no brotherhood* कि अगर शान्ति के लिए जोर–जोर से चिल्लाओ भी तो भी यह सम्भव नहीं है अगर *brotherhood* (भाईचारा) वहाँ नहीं है। एकता हो नहीं सकती है जब तक मानवता नहीं है, और मानवता सम्भव नहीं है जब तक कि यह जागरूकता नहीं है,

Realisation (अनुभूति) नहीं है। जब तक यह *awareness* नहीं है उस वक्त तक सुकून और शान्ति सम्भव ही नहीं है तो अगर शान्ति की दुहाई दी जाती है तो उसके लिए एकता का होना बहुत जरूरी है। मानवता का होना जरूरी है सारे देश में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में तो इस प्रकार ये महापुरुष–सन्तजन–भक्तजन यही बताते आ रहे हैं कि हे मानव! तूने ही तो मानवता को स्थापित करना है, मानवता की डगर पर चलना है। यह किसी और पशु–पक्षी–जानवर से उम्मीद नहीं की जा रही, तेरे से ही यह उम्मीद की जा रही है। मानवता और मानव एकता का कार्य तुझे ही तो करना है। तुझे ही तो उसको स्थापित करना है। तूने ही तो उसको निभाना है इसलिए हे मानव! तूने इस संसार में बहुत कार्य किये, तूने बहुत कुछ हासिल भी किया लेकिन तूने वो कदम नहीं उठाये, नजदीकत पैदा नहीं की। जिस प्रकार से तूने और दूरियों को तय किया उसी प्रकार वो दूरियाँ तूने कम नहीं कीं जो इन्सान और इन्सान के दरमियान हैं। ये फासले वैसे के वैसे ही रहे। हजारों–लाखों मील की दूरियों को तय करके कहीं तू चाँद पर पहुँच गया, कहीं किसी और *Planet* (उपग्रह) पर पहुँच गया तो वो दूरियाँ तो तूने तय कर डालीं लेकिन यह जो दूरी थी इसे तूने नहीं मिटाया। यह दूरी लाखों मीलों की दूरी नहीं है, यह तो तेरे दिलों की दूरी है। उस दूरी को जब तक कम नहीं किया जाता, मिटाया नहीं जाता, तब तक चैन और अमन सम्भव ही नहीं है इसलिए इन दूरियों को मिटाना ही था। महापुरुषों–सन्तों और गुरु–पीर–पैग़म्बरों ने यही एक पाठ सबको पढ़ाया और दिशा–निर्देश दिये।

आज भी अगर बलिदानों और क़ुर्बानियों का जिक्र हो रहा है तो उसके पीछे मक़सद आदमी–आदमी के बीच की दूरी को मिटाना था। अज्ञानता को दूर उन्होंने किया, दूरियों को मिटाने में योगदान दिये लेकिन इस बात को न समझने वालों ने नहीं समझा और ये बलिदान ले लिये गये। महापुरुषों–सन्तजनों ने अपने उन्हीं उसूलों

पर कायम रहते हुए, *Principles* (सिद्धान्तों) को निभाते हुए, प्रेम का दामन न छोड़ते हुए, वैर, ईर्ष्या की डगर पर न चलते हुए अपने उन मूल्यों को कायम रखा, इस प्रकार अपने योगदान दिये और जैसे दास ने कहा कि हर युग में, हर दौर में इसी प्रकार सत्य और मानवता के लिए बलिदान दिये गये। इस दौर में भी इस सत्य के मिशन के लिए भी जहाँ बाबा गुरबचन सिंह जी और चाचा प्रताप सिंह जी ने अपने बलिदान दिये – आज जहाँ उनका जिक्र हो रहा है वहाँ और अनेकों बलिदानियों ने भी बलिदान दिये। अपने विश्वास और उसूलों से वे डगमगाए नहीं। उनके परिवार भी उसी प्रकार के विश्वास और अकीदे कायम रखते हुए औरों के लिए भी प्रेरणा के कारण बने, मजबूती देने के कारण बने, वरना ऐसे दर्दनाक समय में किसी के भी मन डगमगा जाने, डोल जाने स्वाभाविक हैं लेकिन ऐसे परिवारों की मजबूतियों के बने रहने के कारण औरों को भी प्रेरणाएं मिलीं और उनको भी मजबूती मिली। उनके बाद का जो समय बीता है जिसमें ये बलिदान भी एक दशक तक साथ–साथ चलते रहे और साथ ही जो उसूल थे, जो बाबा गुरबचन सिंह जी के पढ़ाये हुए पाठ... उन्होंने, जो सबक, उन्होंने सहनशीलता– प्यार का पढ़ाया था उसी डगर पर चलता आ रहा है यह मिशन और इसी के कारण आज इस मिशन का इतना विशाल रूप है। इस प्रकार जैसे उन्होंने चाहा था कि कोई हदबन्दी न हो, यह मिशन किसी एक भाषा और प्रान्त तक सीमित न रहे, कहीं भी किसी प्रकार की संकीर्णता न हो और यहाँ हर किसी को गले लगाया जाये तो इसी प्रकार से, इन्हीं उसूलों को निभाने के लिए महापुरुष–सन्तजन लगातार योगदान देते चले आ रहे हैं। इसी के कारण यह मिशन इस मुकाम तक पहुँचा है और कितने–कितने रूपों में योगदान दे रहा है। मिशन का योगदान यानि कि जो यह तमाम साध संगत है, यह किस प्रकार महत्वपूर्ण योगदान देती चली जा रही है, अपनी सेवाओं के द्वारा, तन–मन–धन के रूप में जो योगदान दे रही हैं, जो उपकार किये जा रहे हैं, जो प्रचार किया जा रहा है, ऐसे योगदान जो साध संगत देती जा रही है.... इसी कड़ी में आज भी रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ और इसी प्रकार से साल भर में, देश भर में समय–समय पर स्थान–स्थान पर रक्तदान भी किया जाता है। मिशन केवल हिन्दुस्तान में नहीं है, यह तो पूरे संसार के अनेकों मुल्कों में है तो ऐसे योगदान भी अनेकों मुल्कों में दिये जा रहे हैं। जिस निष्ठा और लगन के साथ, जिस *Enthusiasm* (जज़्बे) के साथ, उत्साह के साथ ये योगदान दिये जाते हैं उन्होंने अपने प्रभाव अवश्य स्थान–स्थान पर डाले हैं, छोड़े हैं प्रभाव कि – जो कोई भी एक बार अपनी नज़रों से इस उत्साह को देखता है, इस समर्पण को देखता है तो उसके ऊपर निश्चय

यदि जागृति और अनुभूति नहीं तो शान्ति और सुकून भी नहीं।

❖

शान्ति के लिए एकता और मानवता का होना जरूरी।

❖

लाखों मीलों की दूरी तय कर डाली परन्तु दिलों की दूरी इन्सान तय न कर सका।

ही बहुत सुन्दर प्रभाव पड़ता है। कहने का भाव कि हम अगर शहनशाह बाबा अवतार सिंह जी का जिक्र कर रहे हैं, अगर हम बाबा बूटा सिंह जी का जिक्र कर रहे हैं या बाबा गुरबचन सिंह जी के जीवन का, तमाम बलिदानों का जिक्र कर रहे हैं तो इसी प्रकार, इस रूप में भी यह देन दी जा रही है। आज उसको ही और मजबूती दी जा रही है। साध संगत! यही एक अरदास, यही प्रार्थना की जा रही है कि दातार ऐसी कृपा करे कि जो उनके आदेश–उपदेश हमेशा से रहे, जिस कारण उन्होंने इतना महान बलिदान दिया तो फर्ज यही बनता है कि हम उसी प्रकार से, उसी डगर पर चलते चले जायें। हमेशा ही हम उन कुर्बानियों को, उन शिक्षाओं को याद रखें। कहीं भी हमारी तंगदिलियाँ न हों, संकीर्णताएं न हों।

एक तरफ इतने–इतने बलिदान और एक तरफ छोटी–छोटी बातों में उलझ जाना। छोटी सी बात के ऊपर ही दूरी पैदा कर लेना, गुरसिख का निरादर कर देना या गुरमुख की निरादरी की तरफ चल पड़ना। एक तरफ तो इतनी विशालता और इतने–इतने महान बलिदान, दूसरी तरफ एक बिल्कुल ही विपरीत अवस्था तो हम समझ सकते हैं कि क्या वाकई हम उन बलिदानों का मूल्य चुका रहे हैं?क्या हमारे मनों में वो कद्र रही है जो इतने–इतने बलिदानों की होनी चाहिए थी। संसार से तो उम्मीद की नहीं जा सकती जैसे पहले कहा कि संसार तो इस बात को समझ नहीं पाता है लेकिन जो इसी परिवार का अपने आपको अंग मानते हैं, अगर वो ही उस प्रकार के रास्ते पर न चलें तो फिर यही बात समझ में आती है कि उन बलिदानों की कोई कद्र नहीं की गई है। उनका कोई मोल नहीं डाला गया है।

दास के जहन में अभी एक बात आयी। जब टी.वी. न्यूज दास देखता है तो दो–चार रोज पहले ही उसमें दिखा रहे थे कि खिलाड़ी ने *Century* (शतक) लगाई और टीम हार गई तो आगे से जो न्यूज पढ़ने वाला था, वो यही कह रहा था कि *although this player has made a century but still the team lost because rest of the members of the team, they did not perform well.* (यद्यपि इस खिलाड़ी ने शतक बनाया फिर भी टीम हार गई क्यों कि टीम के बाकी सदस्यों का प्रदर्शन सन्तोषजनक नहीं रहा।) तो एक *Century* होने के बावजूद शिकस्त हासिल हुई। इसी प्रकार कहीं ऐसा न हो कि इतने बलिदान और तप–त्याग हुए और फिर भी कहीं मिशन को ऊँचाई न प्राप्त हो तो हर किसी को उसी प्रकार से निभाना यानि कि गुरमत के अनुसार चलना। गुरसिख का गुरसिख द्वारा सत्कार होना। इसी प्रकार से किन्हीं ओहदों और पदवियों की किसी दौड़ में न लगना। अपने आपको हमेशा ही नतमस्तक करते हुए, इसी अकीदे–विश्वास पर कायम रखते हुए अपने आपको इसी ज्ञान के ऊपर, इसी निराकार के ऊपर स्थित रखना। मानवता के उसूलों से दूर न होकर, इसी पर कायम रहते हुए अपने आपको इस तरह से आगे से आगे बढ़ाते चले जायें। मानव एकता को स्थापित करने में अपने योगदान देते चले जायें, यही एक प्रार्थना यही एक शुभकामना है तो दास और अधिक शब्दों का सहारा न लेता हुआ यही एक अरदास करते हुए आपसे इजाजत चाहेगा।

साध संगत जी, धन निरंकार।

(प्रस्तुति – हरजीत निषाद)

लोकगीत

कश्मीरी

प्रस्तुति ❑ सुकृति–समीक्षा(ऊधमपुर,जम्मू–कश्मीर)

साहिबो सत्थ छम म्य–च्यनी, वत्थ म्य असलिच हवथम।
कूत काला रूदुस बेज़ान, ज़ानि हूंज़ मच् चवथम।

शबनि म्यक प्यठ् आफताबस कूत काल कारे इंतज़ार।
गोड़निचिय येमि व्यअरि पोशन सअत्य सुल्य बुज़नवथस।

शकलि असित इंसा मगर, इंसानियत निश बेखबर।
ध्यातम मत इंमतिहां येमि, शक्लि मत मंदशावतम।

बूज़थअ फरियाद स्अनि, सूज़थअ दादयन दवा।
रोज़तम हरदम मेहरबां, जांह ति पर मत पावतम।

यिम सौखन पअद करन, खलकन अंदर उलफत त लोल।
दूर येमि स्अयत गेच्सि नफरत, ती वनुन हेच्छनावतम।

राजस्थानी

❑ ओम–गोपाल (भीलवाड़ा, राजस्थान)

काई भूल्यो रे मानव बावरा, अब तो इस सतगुरु के दर आजा।

किण देस सू आयो म्हारा बीरा, किण देस मे जाय –2
बात जाण ले या तूं बेगी, नही तो गोता खाय –2
अर–रर.....म्हारा भायड़ा–2 अब तो इस.....

हाथी–घोड़ा–पसु जुण म, मूक्ति नही पाय –2
मानव जीवन भागां वालो, वेद ग्रन्थ समझाय –2
अर–रर.....मोटा भाग रा–2 अब तो इस.....

सतगुरु बीना समझ ना आवे, या राम की बात –2
राम–किशन भी सतगुरू कीना, थारी काई ओकात –2
अर–रर.....बात मानजा–2 अब तो इस.....

आज जगत म सतगुरू आया, ले हरदेव अवतार –2
'ओम–गोपाल' गुरु शरणां माही, पायो निरंकार –2
अर–रर.....ले ले आसरा–2 अब तो इस.....

तर्ज : काई जाओ रे दिल्ली आगरा.....

नेपाली

❑ रमेश विश्वकर्मा 'रंग' (कैलाली, टीकापुर, नेपाल)

झुठो यो संसार।
सत्य छ ऐस जगमा, एउटै निरंकार।
गुरू कृपाले मिल्दछ, ऐसको नाम आधार।

एक निराकार छ सत्य, जग को पालनहार।
कर्ता–धर्ता जगको हो, सृष्टि को दातार।
लाखों बेद ग्रन्थले गाये, ऐसैको हरदम सार....

कण–कणमा व्यापक छ, वन–उपवनमा।
चन्द्र सुर्य तारा अनि, धर्ति गगनमा।
खाली छैन, ऐसको रंगले, कुर्ने ठाउँको धार.....

रूप छैन 'रंग' छैन, छैन ऐसको आकार।
पुरा गुरु मिलेमा, गराउँछ साक्षात्कार।
आदी अन्त सम्मं रहने, अविनाशी सरकार.....

तर्ज : चिठ्ठी आएन मेरो मायालु....

पूर्वी

❑ बाँके कान्त–खंजड़ी (प्रतापगढ़, उ.प्र.)

भूलै न सुधिया तोहार हो,
इहै मांगू मंगनवा।

तव पद रज नित शीश चढ़ाऊँ।
सत पथ स्वाँस स्वाँस अपनाऊँ।
जन–जन का करूँ सत्कार हो, इहै मांगू.....

तुम दाता तुम अन्तरयामी।
घट घट वासी जग के स्वामी।
पार लगावन हार हो, इहै मांगू.....

संगी साथी तुम्ही सहारे।
तुम रखवारे प्राण अधारे।
कारना सदा बेड़ा पार हो, इहै मांगू.....

'बाके कान्त' वचन मनभावन।
रंग राज कलि कलुष नसावन।
रहे 'खंजड़ी' अमर दीदार हो, इहै मांगू.....

तर्ज – लाचारी भजन

दुनिया की छत *(Roof of the World)* पर निरंकारी सत्संग

लेह-लद्दाख में निरंकारी संदेश कर रहा है मनों में सत्य का समावेश

❑ कैलाश उपाध्याय (लेह–लद्दाख)

विश्व में अनेकों ऐसे ऊँचाई वाले क्षेत्र हैं, जहाँ इस सत्य ज्ञान का प्रचार–प्रसार महापुरुषों द्वारा समय–समय पर किया गया। ऐसे स्थानों में भारतवर्ष में 11780 फुट की ऊँचाई पर बसा लेह–लद्दाख शहर अपने आप में विशिष्ट महत्व रखता है। अनेक बोलियों, भाषाओं तथा बौद्ध धर्मस्थलों से परिपूर्ण लेह–लद्दाख जहाँ सामरिक/भौगोलिक महत्व रखता है वहीं पर्यटकों को भी लुभाता है।

18वीं शताब्दी में (मंगोल क्षेत्र से, सत्य प्रचार करते हुए) श्री गुरु नानक देव जी पैदल यहाँ पहुँचे। क्यों कि उस समय यह क्षेत्र सड़क मार्ग से नहीं जुड़ा था। अभी यहाँ पहुँचने के लिए सड़क मार्ग जम्मू/श्रीनगर से 700 कि.मी. तथा हिमाचल प्रदेश की तरफ कुल्लू, मनाली तथा रोहतांग दर्रे से होते हुए 476 कि.मी. तय करना पड़ता है। श्री गुरु नानक देव जी जब यहाँ पहुँचे उस समय यहाँ काफी अशान्त तथा राक्षसी प्रवृत्ति छायी हुई थी। उन महापुरुषों द्वारा दिये गये सत्य सन्देश तथा ब्रह्मज्ञान के माध्यम से शान्ति स्थापित हुई।

वर्ष 1990 में पहली बार यहाँ महात्मा विजय जी अपने कारोबार के सिलसिले में आये तथा वर्ष 1990 में संगत कायम की। पहले–पहल यहाँ कम ही महात्मा पहुँच सके तथा संगत भी घरों में करते रहे। 1992 से 1999 तक महात्मा विजय जी अपने गृहनगर जम्मू लौट गये। वर्ष 1999 के बाद महात्माओं द्वारा फिर इस क्षेत्र का रुख किया गया, तब से अब तक इस क्षेत्र में संगत हो रही है। लेह–लद्दाख तो अपने नाम से ही मशहूर है

(दुनिया की छत) क्यों कि इसकी ऊँचाई बहुत ज्यादा है। वर्ष के 7 माह यह शेष दुनिया से अलग–थलग हो जाता है। सर्दियों में तो यहाँ का तापमान (-) 30 डिग्री से. (–)45 डिग्री तक रहता है फिर भी महात्माओं के जज़्बे तथा निरंकार प्रभु की असीम कृपा से सत्संग लगातार चलता रहता है। इतनी सर्दी होने के बावजूद महात्माओं का उत्साह देखते ही बनता है। सब अपने–अपने घरों से मिट्टी के तेल का प्रबन्ध करके सत्संग भवन में संगत करते हैं। उस समय सहज ही मन आभारी होता है उन महात्माओं का, जिनकी कृपा से इस विषम एवं दुर्गम स्थान पर, भवन किराए पर लेकर संगत की शुरुआत की गई। कभी एक छोटा सा कमरा हुआ करता था, जैसे–जैसे संगतों का आकार बढ़ता गया वैसे–वैसे ही भवन की आवश्यकताओं को देखते हुए महात्माओं ने और भी कमरे किराए पर ले लिये तथा एक बड़े हॉल का आकार दिया गया।

> 11780 फुट की ऊँचाई पर लेह-लद्दाख की संगत वर्ष के 7 माह शेष दुनिया से अलग-थलग रह कर भी हमेशा आनन्द से भरपूर होती है।

यहाँ यह उल्लेख करना भी आवश्यक जान पड़ता है कि वर्ष 2010 में लद्दाख में आयी भीषण बाढ़ (बादल फटने के कारण) से चारों तरफ स्थित घर, मकान व दुकान नष्ट हो चुके थे, परन्तु निरंकार की लीला – मिशन का यह सत्संग भवन बिल्कुल सुरक्षित बचा रहा। इस भीषण त्रासदी में भी सन्त–सेवादारों का जज़्बा देखते ही बनता था। वे उत्साहपूर्वक राहत शिविरों में जा–जाकर लंगर सेवा करते थे। उस समय जो सेवा कर पाये वह सद्गुरु बाबा जी की कल्याणकारी शिक्षाओं की ही परिणाम है।

यहाँ जो परोपकार तथा मानव सेवा की भावना जागी है यह वो शिक्षा है, जो हर युग में गुरुओं–महापुरुषों की रही है। वर्तमान समय में यहाँ करीब 100 से 120 तक की संगत है। स्थानीय निवासियों, सैनिकों/अर्धसैनिक बलों, तथा बाहर से अपने–अपने व्यवसाय के सिलसिले में आये महात्मा इस संगत की शोभा बढ़ाते हैं। लद्दाख के दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले महात्मा बड़ी लगन तथा प्रेम से यहाँ सेवाएं दे रहे हैं। प्रत्येक रविवार को सत्संग भवन में संगत होती है तथा बाकी दिनों में महिला एवं बाल संगत घरों में ही होती है। इस सेवा भावना को देखते हुए सन्तों की अपील पर सरकार द्वारा भी सन्त निरंकारी मिशन, लेह–लद्दाख को 09 कैनाल जगह प्रदान की गयी है परन्तु अभी कुछ प्रशासनिक कार्यवाही होनी अपेक्षित है। सद्गुरु बाबा जी कृपा करें कि यह कार्यवाही आगे बढ़े। जल्दी ही यह कार्य पूर्ण हो ताकि इस दुर्गम स्थान व इतनी ऊँचाई पर भी सत्य ज्ञान का प्रचार बाखूबी व तीव्र गति से हो सके। ■

काव्य प्रवाह

शहीदों को नमन

❐ ज्ञान–कर्म (गुड़गाँव)

आओ मिलके हम प्रणाम करें जो मिशन पे जान लुटा गये –2
इस सत्य, प्यार के मिशन को, जो बुलन्दियों पे पहुँचा गये।

सीने पे गोली सह गये, और जाते–जाते कह गये, –2
उनका भी करना भला प्रभु, हम पर जो गोली चला गये...

भूलेंगी ना ज़िन्दगानियाँ, याद आयेंगी कुर्बानियाँ, –2
आ गये मिशन के काम जो, गुरू दर पे तोड़ निभा गये...

नफरत के काँटे चुन गये, बजाकर जो प्यार की धुन गये, –2
मरकर भी जिन्दा हैं सभी, पदवी अमरता की पा गये...

'ज्ञान–कर्म' मैं ढालकर, सत्गुरू के बचनों को पाल कर –2
रखें सदा ही संभालकर, जो सत्य की जोत जला गये...

तर्ज: है इसी में प्यार की आरजू वो.....

जब से सत्गुरु साकार मिला है...

❐ राजू मुलतानी (दिल्ली)

बेसहारे थे, मिले सहारे जब से यह आधार मिला है।
दातें भी अब पीछे आतीं, जब से यह दातार मिला है।
दुख–क्लेश सब हो गये दूर, जब से यह ग़मख़्वार मिला है।
हर कोई अब प्यार है देता, जब से तेरा प्यार मिला है।
अब जीने को दिल है करता, जब से यह दिलदार मिला है।
जब से सत्गुरु साकार मिला है, अंग–संग यह निरंकार मिला है।

मैं अदना नाचीज था बन्दा, गुरु मिला तो हो गया आला।
बदकिस्मत था किस्मत जागी, मैं भी हो गया किस्मत वाला।
चारों ओर था घोर अंधेरा, ज्ञान मिला तो हुआ उजाला।
इक सजदे में राम मिल गया, जाप किया न फेरी माला।
जिसे ढूंढ़ती सारी दुनिया मुझे यह दसवाँ द्वार मिला है।
जब से सत्गुरु साकार मिला है, अंग–संग यह निरंकार मिला है।

ज्ञानी–ध्यानी, पीर–पैग़म्बर, सब सत्गुरु की शरण में आये।
गुरु बिना ये राज़ खुले न, चाहे जितना जोर लगायें।
तुलसी, मीरा और कबीरा, गुरु की महिमा हर कोई गाये।
आओ भाई तुम भी पा लो, समय हाथ से निकल न जाये।
गुरु की कृपा से 'राजू' को, बेगमपुर घर–बार मिला है।
जब से सत्गुरु साकार मिला है, अंग–संग यह निरंकार मिला है।

सद्गुरु के प्रति

❐ रुपीना (ऑस्ट्रिया)

यह, मुझे – इस कदर चाहता है,
कि – हर शख़्स में दिखता हुआ मिल जाता है,
होती हूँ – जब भी मुश्किलों में मैं,
चुपके से मेरे – सब काम कर जाता है।
अपनी मुस्कान से,
डालता है – जैसे मुर्दों में भी जान,
करके – हर काम,
मेरा नाम कर जाता है।
भूल जाऊँ जिस पल भी, मैं इसे,
हो जाती हूँ उदास
दिलाकर अपनी याद – यह मुझे,
उदासी का काम, तमाम कर जाता है।
पाती हूँ खुद को, जब ज़िन्दगी में तन्हा,
सन्तों की संगति के साये में – यह – मुझे दे देता है, आराम,
न जाने किस गलती से – खुश होकर,
दे देता है – सज़ा की बजाय – इनाम,
सत्गुरु की रहमत से,
मिला है यह अभिन्न साथी मुझे,
जिसकी स्मृति मात्र से – होता है – मुक्ति का इल्हाम,
हृदय बार–बार सत्गुरु का एहतराम कर जाता है।

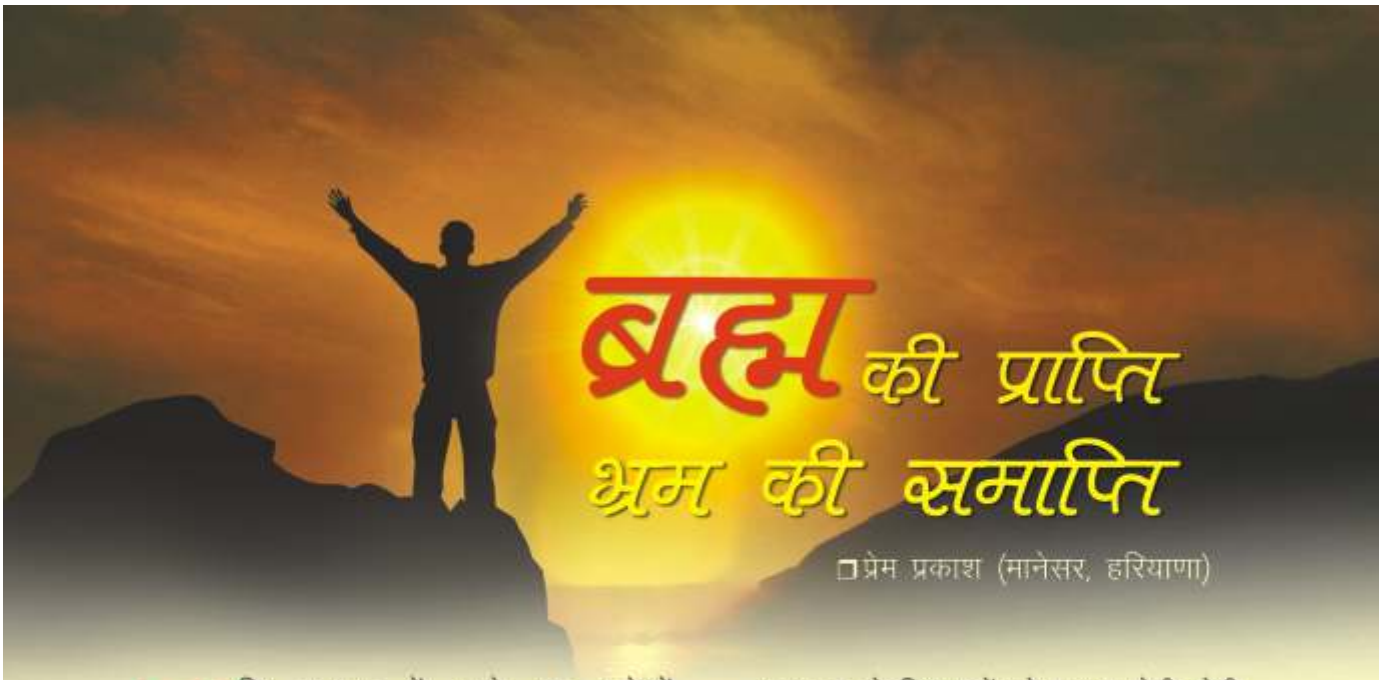

ब्रह्म की प्राप्ति भ्रम की समाप्ति

❑ प्रेम प्रकाश (मानेसर, हरियाणा)

व्यक्ति समाज में रहते हुए अनेकों भ्रमों–भ्रान्तियों से घिरा रहता है। जिस प्रकार अंधेरे में पड़ी रस्सी से साँप होने का भ्रम, भय पैदा करता है इसी प्रकार नाना प्रकार के भ्रम इन्सान को भयभीत किये रहते हैं।

कई दिनों से मेरी बाईं आँख फड़क रही है, इसको मद्देनज़र रखते हुए कई बातें ध्यान में आती हैं।

एक बार वार्षिक सन्त समागम में हिमाचल प्रदेश के एक महात्मा ने कहा था कि लोग आँख फड़कने को अशुभ मानते हैं लेकिन मैं कहता हूँ कि आँख का फड़कना ही तो शुभ है, अशुभ तो तब होगा जब यह फड़कना बन्द कर देगी।

यह बात ध्यान में आते ही शंका का समाधान हो गया। सद्गुरु की कृपा से जब ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई तो पता चला कि इस ज्ञान को पाकर सब शुभ ही शुभ है तथा इसे पाये बगैर शुभ भी अशुभ ही है।

बिल्ली के रास्ता काटने पर महात्मा समझाते हैं कि बिल्ली से पहले हमें निरंकार याद रहे तो सभी बलायें टल जाती हैं, भ्रम दूर हो जाते हैं, मन शान्त हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने एक स्थान पर लिखा है –

तुलसी भरोसे राम के, निर्भय होके सोय।
होनी तो होके रहे, अनहोनी ना होय।।

परमात्मा के विधान में जो घटना होनी होती है, (लेकिन मन जिसके लिए तैयार नहीं होता) संसार में लोग उसे अनहोनी मान लेते हैं और दुर्घटना का नाम दे देते हैं, यही दुःख का कारण है। संसार में जो आया है उसे जाना है, ब्रह्मज्ञानी महात्मा इसे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं, जबकि अन्य लोग सुख मिलने पर खुशी से फूल उठते हैं तथा दुःख मिलने पर रोते–धोते जीवन गुजारते हैं, इसी अवस्था को ध्यान में रखकर सन्त कबीर जी ने कहा –

कबीर इस संसार में, दुःख–सुख सबको होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।।

यह हमें सोचना है कि हमें अपना नाम किस सूची में लिखवाना है। मान लें कि आँख फड़कने से कोई मुसीबत आ सकती है तो इस विषय में भी महात्मा हमें चेतन करते हैं कि मुसीबत के समय कभी यह मत कहो कि "हे भगवान! मुझ पर मुसीबत आ गई है।" बल्कि यह कहो कि – "हे मुसीबत! मेरे साथ यह परमसत्ता सद्गुरु है जिसकी कृपा से सब ठीक हो जायेगा।" अब दूसरे पहलू की ओर देखें कि दायें हाथ की हथेली में खुजली होने पर कुछ लोगों को भ्रम होता है कि कहीं से धन प्राप्त होने वाला है। कई बार ऐसा अवसर बनता है कि धन प्राप्त हो भी जाता है, तो

यह भ्रम और ठोस रूप ले लेता है। यहाँ लोग यह भूल जाते हैं कि जिस प्रकार आई हुई मुसीबत जाने के लिए होती है, उसी प्रकार आया हुआ धन भी तो जाने के लिए होता है, साथ ही अर्जित किये हुए धन का सम्बन्ध आप द्वारा किये गये कर्म से है, हथेली की खुजली से नहीं। यदि इन्सान दो–चार दिन नहाना बन्द कर दे तो पूरे शरीर में खुजली हो जायेगी, हथेली सहित। उस अवस्था में हथेली की खुजली का सम्बन्ध किसी रोग का सूचक होगा धन प्राप्ति की बजाय। सद्गुरु बाबा जी अपने पावन प्रवचनों में यदा–कदा दोहराते हैं –

ऊगा है सो काटिये,
फूला सो कुम्हलाए।
जो बना सो गिर पड़े,
जो आया सो जाए।।

जो उगता है उसे काटा जाता है। जो खिलता है वो मुरझा भी जाता है। जो बनता है, उसे गिरना है तथा जो आता है, उसे जाना भी होता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि –

दृष्टिमान है सगल बिनासी
और
हरि को नामु सदा सुखदाई

सदा के लिए सुख चाहिए तो परमात्मा से नाता जोड़ना होगा –

सुख न एह जग में मिले, करे जो बहुते मीत।
जो चित राखे एक स्यों, सो सुख पावे नीत।।

सन्त कबीर जी ने भी यही समझाया कि –

कोई तन दुखी, कोई मन दुःखी,
कोई धन बिन होत उदास।
कबीर इस संसार में,
सुखिया हरि का दास।।

गुरु नानक देव जी के शब्दों में –

बाली रोवै नाहिं भतारु।।
नानक दुःखीआ सभु संसारु।

गोस्वामी तुलसीदास जी तो यहाँ तक लिखते हैं –

दीन कहे धनवन्त सुखी,
धनवन्त कहे सुखी राजदुलारौ।
राजा कहे चक्रवर्ती सुखी,
चक्रवर्ती कहे सुख इन्द्र को भारौ।
इन्द्र कहे कि विरंच सुखी,
विरंच कहे सुख विष्णु कौ सारौ।
पर दासनदास कहै तुलसी,
प्रभु भक्ति बिना संसार दुःखारौ।

प्रभु की भक्ति करने से पहले प्रभु को जानना जरूरी है। जानकारी के लिए सद्गुरु की शरण में आना जरूरी है। सद्गुरु एक क्षण में प्रभु की जानकारी कराकर, सारे भ्रम दूर कर देता है। भ्रमों के दूर होते ही भक्त कह उठता है –

ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ
ऊतरि गइओ मेरे मन का संसा
जब ते दरसनु पाइआ।

प्रभु दर्शन होने के बाद, सद्गुरु के आदेशानुसार सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हुए हम इसी नतीजे पर सहज ही पहुँच जाते हैं कि –

ब्रह्म की प्राप्ति – भ्रम की समाप्ति। ■

आँख का फड़कना ही तो शुभ है, अशुभ तो तब होगा जब यह फड़कना ही बन्द कर देगी।

❖

बिल्ली के रास्ता काटने पर पहले हमे निरंकार याद रहे तो मन शान्त बना रहता है।

सुखी जीवन का रहस्य

❑ मोहित वधवा (कैथल, हरियाणा)

सुखी जीवन के लिए सकारात्मक सोच का होना आवश्यक है। परमात्मा ने इन्सान को अनेकों खूबियाँ प्रदान की हैं जिनका सन्तुलित उपयोग करके मानव मनोवांछित उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है। परमात्मा ने इन्सान को इतनी ताकत दी है कि वह जिस भी वस्तु को हासिल करना चाहे उसके लिए प्रयासरत होकर उसे प्राप्त कर सकता है। परमात्मा इतना कृपालु है कि जब भक्त इससे प्रार्थना करके कुछ प्राप्त करना चाहता है तो परमात्मा की बनाई सृष्टि उसे पूरा करने में जुट जाती है।

सद्गुरु पर पूर्ण विश्वास और दृढ़ निश्चय के द्वारा विपरीत परिस्थितियों में भी भक्त विचलित नहीं होते और सफलता प्राप्त करते हैं। अगर किसी की तमन्ना पूर्ण नहीं होती तो इसका कारण केवल यह है कि इन्सान अपनी इच्छा पर दृढ़ नहीं रहता और जब हमारा इरादा ही दृढ़ नहीं होगा तो उसे हासिल कैसे करेंगे?

> स्वयं को हीन समझने का मतलब परमात्मा की रचना को महत्वहीन समझने जैसा है।

एक इन्सान को कैंसर था। हम जानते हैं कि कैंसर एक लाइलाज रोग है लेकिन उसकी मनोस्थिति इस प्रकार की थी कि वह हर रोज इस विश्वास से जागता कि आज तो उसका कैंसर ठीक हो गया है। वह इस तरह से ज़िन्दगी व्यतीत करने लगा जैसे उसे कैंसर है ही नहीं। वह इस असामान्य मनोवस्था तक इस कारण पहुँचा क्यों कि आध्यात्मिक संगति के परिणास्वरूप उसने सुख–दुख महसूस करने वाली शक्ति (मन) को प्रभु को समर्पित कर दिया था। इस अवस्था में वह जैसे शरीर में रहकर भी शरीर से अलग हो गया। उसने चूँकि स्वयं को सुख–दुःख से अलग कर लिया था इसलिए भयानक दर्द भी उसे विचलित नहीं कर पाया। इस सहज मनोवस्था के परिणामस्वरूप मन सहज भाव से प्रभु से जुड़ा रहता है। इस सहजता का परिणाम यह हुआ कि जब 3–4 सप्ताह के बाद चैकअप करवाया तो वास्तव में उसका कैंसर ठीक हो चुका था।

हम वास्तव में अपनी खुशी गायब करने के जिम्मेदार खुद हैं। अगर हमें कोई बीमारी है और हम हर वक्त उस बीमारी का ही जिक्र करते रहें, अपने आपको हीन समझते रहें तो उससे रोग ठीक होने वाला नहीं है बल्कि रोग और अधिक बढ़ सकता है। इससे निराशा ही होगी, लेकिन अगर हम अपना ध्यान उस रोग से हटाने का प्रयास करें, जैसे किसी और काम में या किन्हीं अन्य विषयों पर चर्चा करें तो हम महसूस करेंगे कि हमारा आधा रोग तो अपने आप ही ठीक हो गया है। जरूरत है तो केवल अपने ध्यान को, अपनी सोच को सकारात्मक दिशा प्रदान करने की।

हम अपने आपको कभी भी हीन न समझें। स्वयं को हीन समझने का मतलब परमात्मा की रचना को महत्वहीन मानने जैसा है। इसका मतलब यही है कि हीन भावना से ग्रस्त होने की अपेक्षा व्यक्ति को आत्मा की शक्ति को पहचानते हुए कर्मशील बनना चाहिए लेकिन यह ध्यान भी अवश्य रखना होगा कि हम अपने ऊपर अहंकार न करने लगें। सद्गुरु की कृपा समझते हुए हम वो सब कुछ कर सकते हैं जो हमारा लक्ष्य है। अगर हम अपना ध्यान इस ओर लगाएं तो असम्भव नज़र आने वाले कार्य भी सम्भव होते जाते हैं। यहाँ यह भी आवश्यक है कि हम कठिनाईयों से विचलित न हों। चाहे जैसे भी हालात हों हम अपने आपको खुश रखने का प्रयास करें और अनुभव करें कि सद्गुरु बाबा जी ने इस अमूल्य ब्रह्मज्ञान के लिए हमें चुना है और यह हर परिस्थिति में हमारे साथ हैं,। शायर ने कहा भी है –

ज़िन्दगी के पहलू हैं खुशी और ग़म दोनों,
चुनना है हमको कि हम चाहते क्या हैं?

जो निराशा का परित्याग कर निरन्तर कर्म के पथ पर अग्रसर रहते हैं उनका जीवन सदैव सुखमय होता है। ■

सत्संग का प्रभाव

❐ समता नारंग (मॉडल टाउन, दिल्ली)

प्रभु की प्राप्ति में सत्संग का विशेष स्थान है। सत्संग का अर्थ है – सत्य का संग। सत्य निरंकार, प्रभु–परमात्मा है और इसका संग करना ही सत्संग है। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि सद्गुरु–दातार को जानने वालों की सभा को ही सत्संग कहते हैं।

एक झोंपड़ी में एक माता रहती थी। रोज रात होते ही वह दिया जलाया करती थी। एक दिन जब वह दिया जलाकर जाने लगी तो अचानक ही दिया बोल उठा – "माते! मैं रोज तुम्हारी झोंपड़ी का अन्धकार दूर करता हूँ, लेकिन मेरे अपने नीचे सदा अंधेरा छाया रहता है। कभी मेरे नीचे का भी अंधेरा खत्म करने का यत्न करो।"

माता ने दिये की बात सुनी और मुस्कुराते हुए रसोई में चली गई। वहाँ उसने आटे का एक और दिया बनाया। फिर उसे जलाकर पहले वाले दिये के पास लाकर रख दिया।

माता को दूसरा दिया रखते देख पहले वाला दिया बोला – "माते! मैंने तो तुम्हें अपने नीचे का अन्धकार दूर करने को कहा था, उसका कोई उपाय सोचा?"

वह मुस्कुराकर बोली "अपने नीचे झाँक कर देखो, वहाँ आज अन्धेरा नहीं, प्रकाश है।" दिये ने झटपट अपने नीचे देखा, आज वहाँ भी प्रकाश था। दिये की आँखें खुशी से छलक आईं। यह देख माता ने उसे प्यार से समझाना शुरु किया – "अकेला दिया अपने नीचे के अन्धकार को दूर नहीं कर सकता, वे सब दो दिये आपस में मिलकर एक–दूसरे के नीचे के अन्धकार को हर लेते हैं। यही है साध संगत की महत्ता।

ज्ञान लेने के बाद, हमें सत्संग जरूर करना चाहिए। हमेशा महापुरुषों का संग करना चाहिए, जिससे हमारा निरंकार और ज्ञान पर विश्वास और पक्का होता चला जाए। गुरमुख–गुरमुख जब आपस में मिलते हैं तो वैर–द्वेष–अहंकार का अन्धकार दूर होता जाता है। जिस तरह मोबाइल फोन लेकर उसे चार्ज करना जरूरी है, अन्यथा वह किसी काम का नहीं रहता इसी तरह ज्ञान को भी सत्संग रूपी चार्जर से चार्ज करना जरूरी है ताकि हमारा जीवन सुखी हो सके। ■

सद्गुरु बाबा जी के प्रवचन जी.टी.वी. पर

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के पावन प्रवचन जी.टी.वी. पर प्रत्येक बुधवार एवं वीरवार को प्रातः 6:00 से 6:30 बजे तक प्रसारित होते हैं। कृपया आप भी सुनें और औरों को भी सुनने की प्रेरणा दें।

सेवा का संकल्प

यह घटना उस समय की है जब इटली अपने एक पड़ोसी देश के साथ युद्ध लड़ रहा था। एक युवक एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा हुआ दूरबीन से युद्ध का दृश्य देख रहा था। युद्ध में कुछ सैनिक मर चुके थे और कुछ अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहे थे। सैनिकों की दयनीय दशा देखकर वह युवक अत्यंत द्रवित हो गया और उसकी आँखों से आँसू बह निकले। दरअसल वह युवक सम्राट नेपोलियन से मिलने पैरिस गया था, किन्तु जब उसे

पता चला कि सम्राट मोर्चे पर गये हुए हैं तो वह उनसे मिलने मोर्चे की ओर ही चल पड़ा था किन्तु मोर्चे का दृश्य देखकर वह सम्राट से मिलने की बात बिल्कुल ही भूल बैठा। तभी उसे सूचना मिली कि घायल सैनिक गिरजाघर में हैं तो वह तुरन्त उनकी सहायता के लिए वहाँ जा पहुँचा और उनकी सेवा में लग गया। इस बीच युद्ध समाप्त हो गया।

अब उसके मन में यही बात कौंध रही थी कि कुछ भी हो, घायलों की सेवा के लिए एक ऐसा दल होना चाहिए जो तुरन्त मौके पर पहुँचकर उनकी सहायता कर उन्हें नया जीवन प्रदान करे। उसने इस विचार को अंजाम देने के लिए घायलों की सेवा करने वालों का एक ऐसा दल तैयार भी किया। इसके बाद उसने अपने अथक प्रयासों से इस दल को एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के रूप में मान्यता दिलवा दी।

वर्तमान समय में भी जब कहीं युद्ध छिड़ता है तो उस संस्था के सदस्य तुरन्त घायल सैनिकों की सेवा में जुट जाते हैं। वे सदस्य तटस्थ माने जाते हैं और एक विशेष प्रकार की पोशाक पहनते हैं जिस पर एक विशेष चिन्ह बना रहता है। उस संस्था का नाम रेडक्रॉस है, जिसका संस्थापक यही युवक था। इस युवक का नाम जीन हेनरी दूना था जो जेनेवा के एक मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुआ था। प्रत्येक वर्ष जीन हेनरी के जन्मदिन 8 मई को रेडक्रॉस दिवस मनाया जाता है। (साभार)

सन्त निरंकारी का अगस्त 2011 अंक 'चरणामृत' विशेषांक होगा

अध्यात्म में गुरु चरणों की वन्दना और चरणामृत के सेवन से भक्त के आनन्द व तन–मन निरोग होने के विविध वर्णन मिलते हैं। सदगुरु को ईश्वर रूप मानकर भक्त श्रद्धापूर्वक समर्पित होता है और त्रिविध ताप से छुटकारा पा लेता है।

सन्त निरंकारी मिशन में प्रारम्भ से ही चरणामृत का अनूठा व भावपूर्ण स्थान है। वह जल, जिससे श्रद्धा और विश्वासपूर्वक सदगुरु के पाँव पखारे गये हों, चरणामृत है। चरणामृत की महत्ता निर्विवाद है। इसके बारे में सम्पूर्ण चर्चा हेतु ऐसा तय किया गया है कि सन्त निरंकारी का अगस्त 2011 अंक 'चरणामृत' विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाय।

लेखक महानुभावों से अनुरोध है कि उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित अपनी रचनाएं (लेख, गीत, कविता, संस्मरण, प्रेरक प्रसंग आदि) 30 जून 2011 तक भेजकर सहयोग प्रदान करें। लिफाफे पर 'चरणामृत विशेषांक हेतु सामग्री' लिखना न भूलें।

❐ सम्पादक

मानवता को अपनाकर ही मानव एकता सम्भव

मानव एकता समागम में सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का उद्घोष

❑ हरजीत निषाद द्वारा

दिल्ली, 24 अप्रैल। मानव एकता के लिए जागरूकता जरूरी है। अगर मानवता को नहीं अपनाया गया तो मानव एकता को भी स्थापित नहीं किया जा सकेगा। बहुत कुछ हासिल भी किया गया लेकिन दिलों की दूरियाँ अगर कम न की गईं तो संसार में चैन और अमन कायम न रह सकेगा। मानव एकता दिवस के अवसर पर निरंकारी सरोवर के सामने स्थित सन्त समागम मैदान में आयोजित विशाल मानव एकता समागम को सम्बोधित करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने उक्त उद्गार व्यक्त किये।

सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि जाग्रति का भाव परमात्मा के बोध से है। इन्सान आज लाखों मील की दूरी तय करके चाँद व अन्य ग्रहों पर तो पहुँच गया लेकिन वह दिलों की दूरी तय न कर पाया। युगों–युगों से सन्तों–महापुरुषों ने लोगों में व्याप्त अज्ञानता और दूरियों को दूर करने के लिए त्याग और बलिदान दिये। सद्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी का बलिदान भ्रम और अज्ञानता को दूर करते हुए हुआ। चाचा प्रताप सिंह जी तथा अन्य महात्माओं का बलिदान भी मानवता की भलाई करते हुए ही हुआ। इन बलिदानों के कारण आज मिशन को ऊँचाई और विस्तार मिला है। बाबा गुरबचन सिंह जी के जीवन को याद करते हुए सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि सद्गुरु के रूप में वे अपनी जिम्मेदारियों को निभाते चले गये। अन्ततः उन्होंने मानवता की भलाई के लिए अपना जीवन भी समर्पित कर दिया। सद्गुरु रूप में मिली जिम्मेदारी के फलस्वरूप उन्होंने मिशन को नई दिशा और विस्तार दिया। उनकी सादगी और सरलता वाले व्यवहार को हमेशा याद किया जाता है। अज्ञानता और हैवानियत के कारण उत्पन्न हुए तूफानों का भी उन्होंने सामना किया। विपरीत हालात होने पर भी बाबा गुरबचन सिंह जी ने अपना दया, करुणा, क्षमा वाला भाव हमेशा अपनाये रखा।

सद्गुरु बाबा जी ने कहा कि उनके प्रति श्रद्धांजलि देने के लिए उनके प्रेम और परोपकार के कार्य को मिल–जुलकर आगे बढ़ाना होगा। *(पूरे प्रवचन इसी पत्रिका में अन्यत्र उपलब्ध हैं)*

इस अवसर पर अपने भाव व्यक्त करते हुए परम ममतामयी निरंकारी राजमाता जी ने कहा कि सन्तों–महापुरुषों में सहनशीलता, प्रेम और सद्भाव की भावना प्रबल होती है। ऐसे भी उदाहरण हैं कि एक गाल पर चाँटा मारा गया तो दूसरा गाल भी आगे कर दिया गया। यही सन्तों की चाल रही है। सन्तों की चाल हमेशा ही संसार से अलग रही है।

दिल्ली की मेयर सुश्री रजनी अब्बी जी ने इस अवसर पर बोलते हुए मानव एकता के लिए मिशन द्वारा दिये जा रहे योगदान तथा रक्तदान अभियान की सराहना की।

मेयर सुश्री रजनी अब्बी

समागम मैदान में लगाई गई नई प्रदर्शनी...'और युग बदल गया' देखने के लिए लोगों का ताँता लगा रहा।

मानव एकता समागम में श्री जे.आर.डी. 'सत्यार्थी' (प्रधान, संनिम), श्री खेमराज चड्ढा (उपाध्यक्ष, केन्द्रीय योजना एवं सलाहकार बोर्ड संनिम), सर्वश्री दलबीर सिंह, श्री इन्द्रनाथ शर्मा, चाचा प्रताप सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुरिन्द्र कौर तथा सुपुत्र श्री शमशेर सिंह, बहन एकता सिंह, बाबू गीतकार, जगत गीतकार, अजय बेजोड़ व विनय चावला आदि ने गीतों व विचारों के द्वारा मानव एकता को प्रतिपादित किया। कवि दरबार में सर्वश्री मान सिंह 'मान', सुलेख 'साथी', चन्नी फरीदाबादी, बचित्तर 'पारस', ज्ञान–कर्म व बहन कुसुमलता ने भावपूर्ण कविताएं प्रस्तुत कीं।

मानव एकता समागम देश के कोने–कोने में तथा विश्व के अनेकों देशों में आज के दिन आयोजित किया गया।

सद्गुरु बाबा जी द्वारा देश में 70 रक्तदान शिविरों की श्रृंखला का शुभारम्भ

दिल्ली में 1390 यूनिट रक्तदान

❐ विशेष संवादाात द्वारा

दिल्ली, 24 अप्रैल। 'मानव एकता दिवस' पर युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी की स्मृति में सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउण्डेशन द्वारा देश भर में लगाये गये 70 रक्तदान शिविरों की श्रृंखला का शुभारम्भ करते हुए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कहा कि निःस्वार्थ भाव से मानव हित में समर्पित रहने का ज़ज़्बा संसार में कम ही देखने मिलता है। ऐसा उत्साह परोपकार की भावना के बिना असम्भव है।

दिल्ली में बुराड़ी रोड स्थित समागम मैदान में आयोजित शिविर में रक्तदाताओं एवं मीडिया को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि भक्तजन सदैव से ही मानवता के प्रति समर्पित रहते हैं तथा अपना तन, मन, धन मानव कल्याण के लिए ही अर्पित करते रहते हैं। रक्तदान के प्रति यह उत्साह केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी निरन्तर देखने को मिलता है। अनेक सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा मिशन को सम्मानित किया जाता है। भक्त निःस्वार्थ भाव से योगदान देते हैं जब कि संसार में स्वार्थ का बोलवाला होता है।

यहाँ आयोजित रक्तदान शिविर में रेडक्रॉस सोसायटी के चिकित्सकों एवं स्वास्थ्यकर्मियों के अलावा अ.भा. आयुर्विज्ञान संस्थान, गुरु तेग बहादुर, बाड़ा हिन्दुराव, दीनदयाल उपाध्याय, लोकनायक जयप्रकाश, गोबिन्द बल्लभ पंत, कस्तूरबा गाँधी, डॉ. हेडगेवार, डॉ. राममनोहर

लोहिया तथा सुचेता कृपलानी आदि अस्पतालों से आई टीमों ने रक्तसंग्रह का कार्य किया। इस शिविर में 1390 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

आज के दिन दिल्ली के अतिरिक्त देश भर में जो 69 शिविर लगाये गये उनमें महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में नौ–नौ, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं गुजरात में पाँच–पाँच, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा व पंजाब में चार–चार, पश्चिम बंगाल एवं झारखण्ड में तीन–तीन, जम्मू–कश्मीर, बिहार व उत्तराखण्ड में दो–दो और चण्डीगढ़, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गोवा, तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, अण्डमान–निकोबार द्वीप समूह, असम, मेघालय तथा त्रिपुरा में एक–एक शिविर सम्मिलित हैं। नागपुर (महाराष्ट्र) व लखनऊ (उ.प्र.) से भी इस आशय के समाचार प्राप्त हुए हैं। ■

मानव संसाधन विभाग (स.नि.मं.) में अतिरिक्त प्रभारी नियुक्त

श्री इन्द्रनाथ शर्मा

दिल्ली। विगत दिनों सन्त निरंकारी मण्डल के मुख्यालय में आयोजित सन्त निरंकारी कार्यकारिणी समिति की विशेष बैठक में श्री इन्द्रनाथ शर्मा जी को अतिरिक्त प्रभारी की सेवा प्रदान की गयी।

सद्गुरु बाबा जी के आदेशानुसार श्री शर्मा, श्री सी.एल.गुलाटी (प्रभारी–मानव संसाधन विकास एवं सामान्य प्रशासन विभाग, स.नि.मं.) के सहयोगी के रूप में कार्य करेंगे।

– सचिव (मुख्यालय) स.नि.मं.

परमतत्व का बोध करने से आत्मबोध हो जाएगा

– निरंकारी बाबा

❐ राज 'परवाना' (गन्नौर) द्वारा

निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कहा कि मानवता, एकता, अखंडता, विश्वबन्धुत्व व भाईचारे का संदेश सभी सन्तों ने दिया। मानव जीवन का लक्ष्य आत्मा का परमात्मा से मिलन है। परमतत्व का बोध कर लें तो आत्मबोध हो जाएगा।

सद्गुरु बाबा जी यहाँ के जनता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के मैदान में आयोजित सन्त समागम में मंगलकारी प्रवचनों की रसधारा प्रवाहित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि रंग, नस्ल, भाषा, संस्कृति, खान–पान, रहन–सहन, आदि की दृष्टि से व्यक्ति अलग–अलग हैं। इसके बावजूद सबकी माटी एक है, इसे सृजनहार प्रभु ने सजाया है। सबकी गठरी में आत्मा रूपी लाल हैं। जिसने जीवन में अज्ञानता की गाँठ को खोल दिया, उसने परमात्मा को कण–कण में देखा, घट–घट में पहचाना, तो इन्सान खुशियों से भरपूर हो गया।

सबके अन्दर एक नूर

बाबा जी ने कहा कि ज्ञान की रोशनी भेद मिटाती है, भ्रम खत्म करती है। ज्ञान के बाद नफ़रत नहीं प्रेम जागता है, इन्सान हितकारी बनता है। ऐसा बदलाव जिसके जीवन में घटित हुआ, वह किस्मत वाला बन गया। अहम् को विनम्रता में बदला, दूरियों को खत्म करके आत्मीयता से जीवन भरपूर किया। एक खुदा का नूर सबके अन्दर है इसलिए जाति पर गरूर न करें। किसी पर सितम न करें। सत्य को जान लें। जीवन का लक्ष्य जिसने पा लिया वो मालोमाल हो गया। वह आवागमन के चक्र से बच गया।

मूल है यह प्रभु की लौ

निरंकारी बाबा जी ने कहा कि प्रकृति तो मौसम अनुसार बदलती है, लेकिन सत्य नहीं बदलता, यही जीवन का आधार है। सारे ग्रन्थों में यही लिखा है, कि सत्य का ज्ञान सद्गुरु से मिलता है। प्रभु से जुदाई का कारण अज्ञानता है। सत्य से नाता जोड़ लेने वाले का ही कल्याण होता है। यह प्रभु की लौ मूल है, इसको जान लें। इन्सान सत्य से नाता जोड़े, सन्तों ने हर युग में यही प्रेरणा दी है। ब्रह्मज्ञानियों ने ज्ञान दिया तो भ्रम का नाश हुआ। विषयविकारों, मायाजाल में फँसकर जीवन मत गंवा, बंधनों से छुटकारा पा ले, हीरे जैसे जन्म को कोड़ियों के भाव न गंवा।

दिव्य गुणों को अपनाएं तो मानवता जीवंत

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ब्रह्मज्ञान की रोशनी का दीदार कराया। हे मानव! तू भी सद्गुरु की शरण में आकर इस ब्रह्म की अनुभूति कर। भौतिकता तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी को सकारात्मकता के साथ प्रयोग करके समस्त मानव अपने व्यवहार से खुद को मानव के रूप में प्रकट करें सहनशीलता को अपनाएं, प्रेम–स्नेह, सहयोग, आत्मीयता से दिव्य गुणों को इन्सान अपनाकर कार्य करेगा तो मानवता जीवंत हो जाएगी।

रोशन है तेरे नूर से धरती और गगन

हिन्दी, उर्दू, हरियाणवी भाषा में बहुभाषी कवि दरबार हुआ। जिसमें स्थानीय कवि 'राज–परवाना' ने रचना पढ़ी – रोशन है तेरे नूर से धरती यह गगन, दिव्य गुणों की खुशबू से महका है चमन, गन्नौर की धरती तेरे चरणों को छूकर, हो गई है धन्य, तेरी रहमत को नमन।' बुजुर्ग शायर बोधराज 'ज़फ़र' ने कविता तथा, जगत गीतकार ने – प्रभु भक्ति का दान दो, गीत प्रस्तुत किया तो पंडाल में उपस्थित सन्त झूमने लगे। 1998 के बाद गन्नौर में पधारे बाबा जी व मातृशक्तियों के दर्शनों के लिए हजारों की संख्या में निरंकारी श्रद्धालु नमस्कार की लम्बी कतारों में लगे रहे।

मंच का संचालन कुलदीप सिंह जी व रोशन जी ने किया। शाखा गन्नौर के मुखी रामचंद्र जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। ■

उदयपुर जेल में बंदियों को बाँटा गया निरंकारी साहित्य

❐ किशोर 'स्वर्ण' (उदयपुर, राज.)

उदयपुर। सन्त निरंकारी मण्डल के स्थानीय प्रमुख श्री जीत सिंह निरंकारी ने अपने सहयोगियों के साथ उदयपुर के केन्द्रीय कारागृह में बंदियों को आध्यात्मिक साहित्य 'सन्त निरंकारी' पत्रिकाएं आदि बाँटी, ताकि उनके जीवन में सुधार आये।

निरंकारी प्रतिनिधि किशोर 'स्वर्ण' द्वारा रामेश्वर लाल आर्य, पुष्कर कुमार, रामसिंह तथा छायाकार रणजीत सिंह के साथ, जेल अधीक्षक श्री सुरेन्द्र सिंह शेखावत के सहयोग से, जेलर श्री रामावतार शर्मा तथा जेलर भैरू सिंह राठोड़ के नेतृत्व में लगभग 250 पुस्तक–पत्रिकाएं बंदियों को वितरित की गयीं। ■

वाराणसी में आयोजित निरंकारी प्रदर्शनी व सत्संग में उमड़ा विशाल जनसमूह

❐ शिव कुमार (वाराणसी) द्वारा

वाराणसी, 29 अप्रैल। टाउनहाल वाराणसी के विशाल मैदान में 27 अप्रैल से 1 मई तक निरंकारी आध्यात्मिक प्रदर्शनी देखने के लिए हजारों लोगों का ताँता लगा रहा। शहर की आम जनता के अलावा अनेकों गण्यमान्य व्यक्ति, दुकानदार, अधिकारी व बड़ी संख्या में निरंकारी भक्त भी पहुँचे। यह प्रदर्शनी आगन्तुकों के लिए कौतूहल से भरी थी, जो भी देखता, देखता ही रह जाता। ज्ञान की प्राचीनतम नगरी काशी में सम्पन्न मानवता, विश्व–बन्धुत्व व भाईचारे के प्रति समर्पित सन्त निरंकारी मिशन की इस प्रदर्शनी का उद्घाटन, वाराणसी के टाउनहॉल मैदान में, डॉ. आर.के. श्रीनिवास कार्यक्रम अधिशासी, दूरदर्शन वाराणसी द्वारा 27 अप्रैल को फीता काटकर किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. श्रीनिवास ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि सन्त निरंकारी मिशन मानवता की भलाई के लिए अद्वितीय कार्य कर रहा है। मानव एकता की स्थापना केवल आध्यात्मिक जागरूकता के द्वारा ही हो सकती है, जो सन्त निरंकारी मिशन की प्रदर्शनी देखने से स्पष्ट हो जाता है। आपने कहा कि इन्सान की हर समस्या का समाधान यह मिशन अध्यात्म द्वारा कर रहा है। अनेक लोगों ने इस आध्यात्मिक प्रदर्शनी को देखने के बाद आगन्तुक रजिस्टर पर अपने अनुभव यूँ लिखे –

कैण्ट क्षेत्र से विधायक श्रीमती ज्योत्स्ना श्रीवास्तव ने इस रजिस्टर में लिखा कि मैंने निरंकारी प्रदर्शनी को घूम–घूम कर देखा और पढ़ा तथा बहुत प्रभावित हुई। आज की दुनिया में इस प्रकार की (शान्ति तथा कर्म क्षेत्र में समन्वय की प्रधानता व आध्यात्मिकतामय सन्देश से युक्त) प्रदर्शनी की बहुत जरूरत है। सन्तोष गुप्ता (लालगंज) ने लिखा कि एक नई दुनिया का उदय हो रहा है। आर.पी.आचार्य (पत्रकार) सिंगरौली ने लिखा कि आध्यात्मिक निरंकारी प्रदर्शनी देखकर लगा कि आज के दौर में मानवता के मसीहा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ही हैं।

मंजुलता, सोनिया वाराणसी ने लिखा कि बाबा जी की प्रदर्शनी देखकर बहुत ही अच्छा लगा। बाबा जी का मंगलकारी संकल्प हृदय को छू गया, आत्मा खिल उठी। संकटा प्रसाद (चन्दौली) ने लिखा कि यह प्रदर्शनी सब में धर्म, वर्ण, संस्कृति व जातीयता से अलग निर्मल प्रेम का विशाल भाव प्रकट करती है। रवि शर्मा पाण्डेय ने लिखा कि बाबा हरदेव सिंह जी द्वारा मानवता के लिए किये जा रहे कार्यों से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ और उनके मिशन से सक्रिय रूप से जुड़ना भी चाहूँगा। विनय कुमर (चन्दौली) ने लिखा कि मानवता के हित में जीवन जीने का सही मार्गदर्शन। मनीष कुमार (सारनाथ) ने लिखा कि ज्ञान का भण्डार लगा है। काजल बंसल ने लिखा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे शहर के हृदयस्थल में यह प्रदर्शनी लगी और वाराणसी शहर के लोगों को उत्साहित किया गया।

इस आध्यात्मिक प्रदर्शनी की हर व्यवस्था चाहे वह कैण्टीन की थी या निःशुल्क साइकिल स्टैण्ड की, शौचालय की, प्रदर्शनी के अन्दर व बाहर की, रिसेप्शन की, निरंकारी प्रदर्शनी के प्रबन्धक श्री कुलदीप सिंह तथा स्थानीय प्रबन्धक महात्माओं सर्वश्री रमाशंकर जी शुक्ला (क्षेत्रीय प्रभारी) तथा उनके सहयोगियों के नेतृत्व में सन्त निरंकारी सेवादल के मुस्तैद स्वयंसेवकों द्वारा तत्परता से निभाई गयी। एक वाहन द्वारा भी शहर के हर क्षेत्र में प्रदर्शनी की सूचना पहुँचाई जाती रही। स्थानीय समाचार पत्रों द्वारा भी सन्त निरंकारी मिशन के सिद्धान्तों व गतिविधियों पर आधारित समाचार निरन्तर प्रस्तुत किये जाते रहे।

सत्संग समारोह

निरंकारी मिशन के सत्य सिद्धान्तों व जनकल्याणकारी गतिविधियों की जानकारी स्थानीय जनसामान्य को देने के लिए प्रदर्शनी के साथ विशाल सत्संग समारोह भी आयोजित किया जाता रहा।

29 अप्रैल को आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता निरंकारी प्रदर्शनी के प्रबन्धक व केन्द्रीय प्रचारक श्री कुलदीप सिंह जी ने की।

उन्होंने अपने विचारों में कहा कि परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं बल्कि ब्रह्मवेत्ता महात्मा का मिलना मुश्किल है। जब कोई ब्रह्मवेत्ता, तत्ववेत्ता मिल गया तो वो पल भर में प्रभु को दिखा सकता है।

निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी आज के युग में उसी ब्रह्म को दिखा रहे हैं, जो त्रेता में वशिष्ठ जी ने श्री राम को, द्वापर में भगवान श्री कृष्ण ने रणक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को, अष्टावक्र जी ने राजा जनक को, रामकृष्ण परमहंस जी ने स्वामी विवेकानन्द को, रामानन्द जी ने सन्त कबीर जी को दिखाया।

आपने अपने सम्बोधन में कहा कि जो बिना पैरों के चलता है, बिना कानों के सुनता है, ऐसे परमपिता परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना ही मानव जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य है।

श्री सिंह ने कहा कि आज ये निरंकारी महात्मा इस आध्यात्मिक प्रदर्शनी के माध्यम से, सत्संग के

माध्यम से यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि जैसे हमने परमात्मा को जानकर मानव जीवन पाने का लक्ष्य पूरा किया है, संसार के इन्सान भी ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु की शरण में आकर इस लक्ष्य को प्राप्त करके अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

सत्संग को सम्बोधित करते हुए मुंबई से आये महात्मा राजबली सिंह जी ने कहा कि आज निरंकारी बाबा जी ब्रह्मज्ञान देकर मानव जीवन के हर पहलू को सुन्दर बनाने का सफल प्रयास कर रहे हैं, जिससे मानवता स्थापित हो, दानवता समाप्त हो। इसके अलावा भी सत्संग में अनेक निरंकारी भक्तों ने सद्गुरु बाबा जी द्वारा किये जा रहे अतुलनीय योगदान पर प्रकाश डाला।

जबलपुर (म.प्र.) में क्षेत्रीय लेखा-जोखा कार्यालय का शुभारम्भ

❐ विजय बत्रा द्वारा

जबलपुर, 25 मार्च। सन्त निरंकारी सत्संग भवन गोल बाजार जबलपुर में चौथे क्षेत्रीय लेखा–जोखा कार्यालय का शुभारम्भ श्री डी.आर. सिक्का प्रभारी (लेखा–जोखा, सनिमे) द्वारा फीता काटकर किया गया। इससे पूर्व सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी के आशीर्वाद से चण्डीगढ़, मुम्बई तथा इलाहाबाद में ऐसे ही कार्यालय खोले गये हैं। जबलपुर कार्यालय से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ राजस्थान के अलावा नागपुर (महाराष्ट्र) की ब्रांचें सम्बद्ध होंगी।

अगले दिन 26 मार्च को सन्त निरंकारी सत्संग भवन, भोपाल में लेखा–जोखा सेवा से सम्बन्धित सेवादार भक्तों की बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री सिक्का ने कहा कि धन की तीन गतियां होती हैं – दान, उपभोग और विनाश, जिसमें दान को सर्वोत्तम कहा गया है। सन्तजन हमेशा गुरुवचनों के अनुसार माया सेवा में योगदान देकर परोपकार करते जाते हैं, स्वयं लाभान्वित होते हैं और संसार को लाभ पहुँचाते हैं। इस अवसर पर श्री नवनीत नागपाल, श्री बी.आर. कश्यप, श्री सेवा सिंह गाबरी, श्री नरेन्द्र शर्मा तथा श्री नोतनदास (सभी जोनल इंचार्ज, म.प्र.) ने अपने भाव व्यक्त किये। बहन किशोरी खत्री जी को क्षेत्रीय कार्यालय– जबलपुर का इंचार्ज बनाया गया है। पाँचवा क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी में खोलने की योजना है जिसमें बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा पूर्वोत्तर राज्य शामिल होंगे। ■

सद्गुरु के आज्ञानुसार की गयी सेवा ही सर्वश्रेष्ठ
- श्री हरबंस लाल अरोड़ा जी

❐ विनीत खेड़ा

कलानौर 27 मार्च। आज यहाँ जिला स्तरीय समागम सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री हरबंस लाल अरोड़ा (प्रभारी, सेवादल व विदेश विभाग) ने की। इस अवसर पर आपने फरमाया कि सद्गुरु प्रसन्न होने पर भक्त को सेवा प्रदान करता है, लेकिन सेवा निष्काम होनी चाहिए। जो सद्गुरु के आदेश मुताबिक सेवा करता है वही गुरु दर पर स्वीकार होता है। भक्त सेवा अकर्ता भाव से करता है तथा सब कुछ करते हुए भी श्रेय सद्गुरु को ही देता है। श्री अरोड़ा ने अपने विचारों में दया, सहनशीलता, विशालता, परोपकार आदि गुण अपनाने पर जोर दिया। इस अवसर पर आस–पास की सभी ब्रांचों के महापुरुषों ने भाग लिया, जिनमें निगाना ब्राँच के मुखी श्री सत्यवीर 'निराला' ने सुन्दर रचना पढ़ी। इस कार्यक्रम की यह विशेषता रही कि यहाँ के सभी धर्मस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया व निरंकारी मिशन के सिद्धान्तों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री एच.एस.कोहली (केन्द्रीय सेवादल अधिकारी) श्री चुन्नी लाल (जोनल इंचार्ज–रोहतक) श्री एस.एल.गुलाटी (संचालक), सतीश कालड़ा व श्री राकेश खेड़ा (एडवोकेट) ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में सेवादल प्रभारी द्वारा नवनियुक्त सेवादल इंचार्ज श्री हरीश बेरी को नियुक्ति पत्र सौंपा गया। समापन सत्र में स्थानीय शाखा प्रमुख श्री राजेश खेड़ा द्वारा सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया गया। ■

पाठक मंच

हमारी बाड़मेर ब्रांच की बाल संगत की इंचार्ज बहन की शादी होने जा रही थी, सारी बाल संगत अपनी दृष्टि से उपहार देने के बारे में सोच रही थी। दास ने सोचा क्यों न हम भी इस बहन को कुछ उपहार दें अगर उपहार देना ही है तो ऐसा दें कि सारी बाल संगत का एक सांझा उपहार लगे।

सद्गुरु बाबा जी का भी आशीर्वाद इस रूप में आया है कि जन्मदिवस, विवाह आदि के मौके पर इस प्रकार का उपहार प्रदान किया जाए।

आपसी विचार–विमर्श में सभी ने यह निर्णय लिया कि सन्त निरंकारी पत्रिका का आजीवन सदस्यता उपहार स्वरूप इस बहन को भेंट किया जाय।

इस उपहार से बढ़कर कोई उपहार नहीं।

❐ विनोद कुमार (बाडमेर, राजस्थान)

आज ही मुझे सन्त निरंकारी का अप्रैल 2011 अंक प्राप्त हुआ। अपने पते पर पत्रिका प्राप्त करके पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगा, खासकर सम्पादकीय 'कद्र करें' बहुत पसन्द आया। मुखपृष्ठ पर सद्गुरु बाबा जी का फोटो आकर्षक लगा, मानो अभी बोल उठेगा। रक्तदान से सम्बन्धित लेख 'मानवता की शान रक्तदान अभियान' (राजेश कुमार, भगवान दास बत्रा) में रक्तदान से सम्बन्धित बहुत उपयोगी जानकारियाँ मिलीं। सद्गुरु बाबा जी एवं सन्त निरंकारी मिशन से सम्बन्धित जानकारियाँ इसी प्रकार मिलती रहेंगी यही आकांक्षा है।

❐ अमित रंजन (गया, बिहार)

प्रसन्नता का विषय है कि सन्त निरंकारी मिशन अपनी मासिक पत्रिका 'सन्त निरंकारी' के माध्यम से धर्म और अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत कर मानव मात्र की सेवा में तत्पर है। संसार के सभी मनुष्य एक प्रभु की सन्तान हैं तथा मानव मात्र की सेवा ही परमधर्म है – इस प्रकार भी मान्यताओं को रेखांकित कर तथा सार्वभौमिक और सार्वकालिक मूल्यों की अनिवार्यता एवं महत्ता की प्रतिस्थापना के लिए निरन्तर प्रयासरत, सन्त निरंकारी मिशन के क्रियाकलापों की जितनी सराहना की जाये, कम है। मेरा परम सौभाग्य है कि मेरे एक निरंकारी मित्र ने मुझे निरंकारी मिशन के साथ जुड़ जाने के लिए प्रेरित किया। सन्त निरंकारी पत्रिका मेरी वृत्ति को परमात्मा के साथ जोड़े रखने में बहुत सार्थक साबित हुई है।

❐ प्रो. आर.एन.तिवारी (सहारनपुर, उ.प्र.)

सन्त निरंकारी पत्रिका का मई 2011 अंक प्राप्त हुआ। माता–पिता और अन्य बुजुर्गों का सम्मान करने की प्रेरणा पत्रिका में बहुत अच्छी तरह दी गई है, इससे हमें बुजुर्गों के सम्मान की शिक्षा प्राप्त हुई। सद्गुरु बाबा जी की सिखलाई अपनाकर हम बुजुर्गों का तो सम्मान करें साथ ही युवा लोगों के साथ भी हमारा व्यवहार अच्छा बनें हम सभी मित्रों ने ऐसा निश्चय किया है।

❐ धीरेन्द्र कुमार (रंजीतपुर, उ.प्र.)

मार्च 2011 का अंक हमें बहुत अच्छा लगा कारण कि पत्रिका के सभी पृष्ठ बहुत आकर्षण भरे थे, इसकी जितनी भी तारीफ की जाये कम है। दास का मन प्रफुल्लित हो उठा साथ ही 'श्री गुरुवचनामृत' तो हमारे दिल को छू गया। हमारा सुझाव है कि छोटी–छोटी प्रासंगिक कहानियाँ अधिक मात्रा में शामिल किया करें। सन्तों–महापुरुषों के सुविचारों को भी प्रकाशित किया करें।

❐ श्याम संतानी (अकोला, महाराष्ट्र)

विशेष निवेदन

समय पर पत्रिका का चंदा जमा करवाना भी एक सेवा है, इसलिए चंदा समाप्त होने से पहले ही इसे जमा करवाने की कृपा करें।

❐ मैनेजर (पत्रिका विभाग)
सन्त निरंकारी मंडल, दिल्ली–9

सुलतान पुरी (दिल्ली) मे सदगुरु बाबा जी व मातृशक्तियों की पावन उपस्थिति में आयोजित सत्संग समारोह में लोकगीत प्रस्तुत करते हुए स्थानीय भाई–बहन

सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली में आयोजित युवा प्रतिभा विकास शिविर में उपस्थित युवा बहन–भाई व शिविर के आयोजक

नागपुर (महाराष्ट्र) में रक्तदान के बाद उच्च तकनीकी क्षमतायुक्त रक्तसंग्रह वाहन के सामने एकत्रित रक्तदाता एवं आयोजक महात्मा

Registered with the Registrar of Newspaper
For India Under RNI Number 723/57

Delhi Postal Regd. No. DL(N)01/0135/09-11
Licence Number U(DN) 25/09-11
Licenced to Post Without Pre Payment

दिल्ली में मानव एकता दिवस समागम में उपस्थित श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्गुरु बाबा जी, साथ में विराजमान हैं मातृशक्तियाँ

मानव एकता दिवस समागम में उपस्थित विशाल मानव परिवार

मानव एकता दिवस के अवसर पर दिल्ली में लगाए गये रक्तदान शिविर में पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए सद्गुरु बाबा जी साथ में हैं मातृशक्तियाँ

Posted at IMBC/1
Prescribed Dates 27th & 28th
Dates of Publication : 20th & 21st
Advance Month